वरदानों का कमाल

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Vardanon Ka Kamal (Adventures With Boons)
Cover Page picture : Boons
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2014
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

वरदानों का कमाल 7

1 जादुई बटुआ 9

2 कुआन यिन की भविष्यवाणी 16

3 सबसे अच्छी इच्छा 29

4 ताश खेलने वाला–1 42

5 ताश खेलने वाला–2 62

6 बोतल में बन्द मौत 67

7 सॉप 72

8 आधा नौजवान 84

9 दो बहिनें 98

10 कृतज्ञ सॉप 106

11 जानवरों की भाषा–1 114

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

वरदानों का कमाल

वरदान दो तरीके से दिये जाते हैं — एक तो मॉगने वाले की मरजी से और दूसरे देने वाले की मरजी से। साधारणतया जब ये मॉगने वाले की मरजी से दिये जाते हैं तब ये इच्छा पूरी करने वाले कहलाते हैं पर जब ये देने वाले की मरजी से दिये जाते हैं तब ये वरदान कहे जाते हैं। पर अक्सर हम इन शब्दों को दोनों तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं।

हमारे हिन्दू धर्म में तो वरदानों या इस इच्छा पूरी करने की ताकत का बहुत बड़ा हाथ है पर यह ताकत लोक कथाओं में भी कहानियों के रूप में भी आ गयी है। इस पुस्तक में वरदान की यही परिभाषा इस्तेमाल की है जिसमें लोगों ने अपनी इच्छा से दूसरों को वरदान दिये हैं न कि किसी ने कुछ मॉगा है और हमने ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं यहॉ इकट्ठी की हैं जिनमें देने वाले ने अपने आप ही ये वरदान दिये हैं या अगर नहीं भी मॉगा है तो दूसरे के ऊपर खुश हो कर उन्होंने उसे कुछ दिया है जिससे उसकी इच्छाऐं पूरी हुई हैं।

इन कथाओं में कहीं कहीं वरदानों के साथ साथ शाप भी हैं। जहॉ वरदान खुश हो कर किसी भलाई के लिये दिये जाते हैं वहीं शाप किसी पर नाराज हो कर उसका बुरा चाहने के लिये या उसको सबक सिखाने के लिये दिये जाते हैं।

पर इसका एक पहलू और भी है। जिसको यह वरदान मिलता है या जिसकी भी यह इच्छा पूरी होती है वह इसका कैसे और कितना इस्तेमाल करता है यह देखने वाली बात है।

तो लो पढ़ो ये वरदान देने वाली लोक कथाऐं। ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं। इनमें कुछ कथाऐं जानवरों की हैं कुछ आदमियों की और कुछ देवताओं की।

आशा है कि ये सभी लोक कथाऐं तुम लोगों को मजेदार लगेंगी और तुम इनका भरपूर आनन्द उठाओगे।

1 जादुई बटुआ[1]

वरदान की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के कोरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत साल पहले की बात है कि एक आदमी अपनी पत्नी के साथ एक बहुत ही छोटी सी जमीन पर एक खपरैल की छत वाली झोंपड़ी में रहता था। वे लोग बहुत गरीब थे और उनके पास रहने सहने के लिये भी बहुत ही कम था।

वे लोग रोज लकड़ी काटने के लिये जंगल जाते थे और वहॉ से दो गट्ठर लकड़ी ले आते थे। एक गट्ठर की लकड़ी से वे खाना बनाते थे और अपना घर गरम रखते थे और दूसरे गट्ठर की लकड़ी को बाजार में ले जा कर बेच देते थे। उससे जो पैसे उनको मिलते थे उनसे वे अपनी जरूरत की चीज़ें खरीद लेते थे।

एक दिन जब वे रोज की तरह जंगल से लकड़ी काट कर घर लौटे तो रोज की तरह उन्होंने एक गट्ठर तो बेचने के लिये बाहर ही छोड़ दिया और दूसरा गट्ठर खाना बनाने के लिये अपनी रसोई में रख दिया।

पर अगली सुबह जब वे बाहर वाले गट्ठर को उठाने गये तो उन्होंने देखा कि उनका वह गट्ठर तो वहॉ था ही नहीं। सो उनको

[1] The Magic Moneybag – a folktale from Korea, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=113
Retold and written by Mike Lockett.

अपना रसोई में रखा गट्ठर जो उन्होंने अपना खाना बनाने के लिये रखा था उसी को बेचना पड़ा।

इसका मतलब यह था कि उस रात न तो घर गरम करने के लिये लकड़ी थी और न ही खाना पकाने के लिये कोई आग थी।

अगले दिन उन्होंने फिर से दो गट्ठर लकड़ी काटी और रोज की तरह एक गट्ठर बाहर रख दिया और एक गट्ठर रसोई में रख दिया। पर उसके अगले दिन सुबह फिर से वह बाहर वाला लकड़ी का गट्ठर गायब था।

ऐसा चार दिन तक लगातार होता रहा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनका वह लकड़ी का गट्ठर जाता कहॉ है और उसे कौन ले जाता है।

पति को एक विचार आया। पॉचवें दिन उसने इस गट्ठर के बीच में एक जगह की और उसमें छिप कर बैठ गया। उसने यह सोच रखा था कि आज वह यह पता लगा कर ही रहेगा कि उसकी लकड़ियों का गट्ठर कौन ले जाता है।

आधी रात के समय एक रस्सी ऊपर आसमान से नीचे गिरी, उसने अपने आपको उस गट्ठर से बॉधा और उस गट्ठर को आसमान में खींच लिया। वह आदमी अभी भी उस गट्ठर के अन्दर था सो वह भी उस गट्ठर के साथ साथ ऊपर चला गया।

जब लकड़ी के गट्ठर ने हिलना बन्द कर दिया तो उस लकड़हारे ने उस गट्ठर के बाहर झॉक कर देखा तो उसने देखा कि वह तो

बादलों में था। उसने वहॉ एक सफेद बालों वाला आदमी उस गट्ठर की तरफ आता हुआ देखा।

उस सफेद बालों वाले आदमी ने उस गट्ठर को खोला तो उसमें एक आदमी को देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उस आदमी से पूछा — "सारे लोग केवल एक गट्ठर लकड़ी काट कर ले जाते हैं और तुम दो गट्ठर लकड़ी काट कर लाते हो, क्यों?"

लकड़हारा बोला — "हम लोग बहुत गरीब हैं। हम एक गट्ठर लकड़ी अपना घर गरम रखने के और अपना खाना पकाने के लिये इस्तेमाल करते हैं और दूसरा गट्ठर लकड़ी बाजार में बेच देते हैं जिससे मिले पैसों से हम अपनी जरूरत का सामान खरीदते हैं।"

वह बूढ़ा हॅसा और बोला — "मुझे तुम्हारा जवाब पहले से ही पता था। मैं तो तुमको यहॉ बादलों में से बहुत दिनों से देख रहा हूॅ। तुम आदमियों और जानवरों पर दया करते हो। तुम हर एक के साथ दया और प्यार से बरताव करते हो।

तुम अपनी ज़िन्दगी बिताने के लिये बहुत मेहनत करते हो। क्योंकि तुम दोनों बहुत ही अच्छे हो, इसलिये मैं तुमको एक बहुत ही खास खजाना देता हूॅ – एक जादुई बटुआ।"

इतना कह कर उस बूढ़े ने एक थैला निकाला और उस थैले को उस आदमी को देते हुए कहा — "इस थैले में से तुम एक चॉदी का सिक्का रोज निकाल सकते हो।

वह सिक्का केवल तुम्हारी रोज की जरूरतों को पूरा करने के लिये ही काफी नहीं होगा बल्कि अपनी दूसरी जरूरतों को पूरा करने के बाद भी तुम्हारे पास उस सिक्के में से कुछ बच जायेगा जिसको बाद में तुम कोई बड़ी चीज़ खरीदने के लिये काम में ला सकते हो।

पर हॉ तुम इसमें से रोज एक सिक्के से ज़्यादा मत निकालना। इस तरह तुम इस थैले को बहुत सालों तक इस्तेमाल करते रहोगे।"

लकड़हारे ने उस बूढ़े के हाथ से वह थैला ले लिया और तुरन्त ही उलट दिया पर उसके अन्दर तो कोई पैसा नहीं था। फिर भी उसने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसी रस्सी के सहारे बादलों में से नीचे उतर आया जो उसको बादलों तक ले गयी थी।

घर आ कर वह थैला उसने अपनी पत्नी को दे दिया और उसको उस थैला मिलने की सारी कहानी सुना दी।

थैला पा कर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही उस थैले में अपना हाथ डाला तो उसके हाथ में चॉदी का एक चमचमाता सिक्का आ गया।

वह सिक्का उनकी जरूरत का सामान खरीदने के लिये काफी था बल्कि खरीदारी करने के बाद भी उसमें से कुछ पैसा बच गया था जैसा कि उस बूढ़े ने उस आदमी से कहा था।

सो थैले के सिक्के और लकड़ी काटने से मिले पैसे से उन्होंने अब कुछ पैसे बचाने शुरू कर दिये और यह सोचना शुरू कर दिया कि वे उसका क्या खरीदेंगे।

दिन पर दिन गुजरते गये और उन दोनों की बचत बढ़ती गयी। पति रोज अपनी पत्नी से कहता — "चलो अब हम इसका एक बैल खरीद लेते हैं।" पर पत्नी उसकी इस बात पर राजी नहीं होती।

कुछ दिन बाद पति बोला — "क्या हो अगर हम कुछ एकड़ जमीन खरीद लें?" पर उसकी पत्नी इस बात पर भी राजी नहीं थी।

कुछ दिन बाद पति बोला — "अब हम नया मकान बना लें?" असल में पत्नी कोई नयी चीज़ खरीदने से पहले कुछ दिन और पैसे बचाना चाहती थी पर बाद में वह नया घर बनाने पर राजी हो गयी।

यह नया घर कोई बहुत बड़ा महल नहीं था बल्कि जिस झोंपड़ी में वे अभी रहते थे उससे कुछ ही बड़ा घर था। पर पति ने जिद की कि उनको अबकी बार ईंटों का मकान बनाना चाहिये।

वह बचाया हुआ सारा पैसा उस मकान पर खर्च करने की सोच रहा था क्योंकि वह सोचता था कि आगे तो और भी पैसा बच जायेगा।

पत्नी ने अपने पति को लाख समझाने की कोशिश की पर फिर भी वह अपने पति को यह नहीं समझा सकी कि उसको आगे के लिये कुछ बचा कर रखना चाहिये सो उसको भी ईंटों का मकान बनवाने पर राजी हो जाना पड़ा।

पति ने काफी पैसा ईंटों, लकड़ी और टाइल का फर्श खरीदने पर खर्च किया। फिर उसने मजदूर बुलवाये और घर बनवाने का काम घर पर रह कर ही देखने का निश्चय किया।

इससे वह जंगल लकड़ी काटने नहीं जा सका और जब वह लकड़ी नहीं ला सका तो बेचता क्या? ईंटों का मकान बनवाना मॅहगा था और काम धीरे धीरे चल रहा था। उसकी बचत जल्दी जल्दी खत्म होने लगी। पति हर काम अभी अभी चाहता था, बाद में नहीं।

उसकी यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उस थैले में से एक दिन में केवल एक ही सिक्का क्यों निकाल सकता था।

एक दिन बिना अपनी पत्नी को बताये हुए उसने थैले में हाथ डाला। उसने दूसरा सिक्का निकाला, फिर तीसरा, फिर चौथा।

उसने उस बूढ़े की सलाह बिल्कुल भी नहीं मानी और फिर जब पॉचवीं बार उसने उस थैले में हाथ डाला तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। उसका हाथ खाली था।

इतना ही नहीं उसके पहले निकाले हुए चार सिक्के भी गायब हो गये थे। अब इससे ज्यादा बुरा उसके लिये और क्या हो सकता था कि उसका ईंटों का मकान भी गायब हो गया था।

और अब वह अपनी पुरानी खपरैल की छत वाली झोंपड़ी में खड़ा था। उसके लालच ने उसका सब कुछ खो दिया था।

पति को बहुत दुख हुआ खास कर के जब जबकि उसको अपनी पत्नी को यह बताना पड़ा कि क्या हुआ था।

पर उसकी पत्नी अभी भी अपने पति को बहुत प्यार करती थी। उसने अपने पति को सलाह दी कि अब उनको फिर से पहाड़ पर लकड़ी काटने जाना चाहिये जैसे कि वे पहले जाया करते थे।

लोगों को या तो अपनी कड़ी मेहनत पर भरोसा करना चाहिये या फिर दूसरों की बात माननी चाहिये।

2 कुआन यिन की भविष्यवाणी[2]

वरदानों की यह एक दंत कथा है जो एशिया महाद्वीप के चीन देश की दंत कथाओं से ली गयी है। इसमें एक देवी एक स्त्री को यह वरदान देती है कि उसका बेटा एक ऐसी नदी पर पुल बनवायेगा जिस नदी ने बहुत सारे लोगों को मारा है।

लो यॉग नदी फूकीं प्रान्त में[3] सबसे ज़्यादा काम आने वाली, सबसे ज़्यादा चौड़ी और सबसे ज़्यादा खतरनाक नदी थी। यह नदी सारे प्रान्त में कच्चा माल और खाना ले जाने का मुख्य जरिया थी।

बहुत सारे लोग उस नदी को पार करते हुए मर गये थे पर वे उसको पार करने के लिये उस पर एक पुल नहीं बना सके थे।

एक दिन पतझड़ की एक सुबह को अचानक ही लो यॉग नदी में बहुत ज़ोर का तूफान आ गया। यह तूफान इतनी ज़ोर का था कि उस तूफान की हवा के एक ही झोंके ने उसके पास में लगे सारे पेड़ उखाड़ दिये थे और बहुत सारे मकान गिरा दिये थे।

उसी समय नदी में एक छोटा सा जहाज़ यात्रियों को ले कर जा रहा था। वह भी उस नदी में तूफान से उठे भॅवर[4] में फॅस गया।

---

[2] Kuan Yin's Prophecy – a myth from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

[3] Lo Yang River in Fukien Province

[4] Translated for the word "Whirlpool". See its picture above.

और फिर हवा और लहरों ने उसको इतना ऊँचा उठा कर किनारे डाल दिया कि जिससे सुबह की रोशनी भी रुक गयी।

उस जहाज़ में बैठे यात्री सहायता के लिये चिल्लाने लगे, बच्चे डर कर रोने लगे और मुर्गियों, मछलियों और सब्जियों की टोकरियॉ उछल उछल कर नदी के पानी में गिरने लगीं।

उस जहाज़ में बैठे यात्रियों ने तो यह उम्मीद ही छोड़ दी थी कि वे फिर कभी जमीन पर चल पायेंगे कि तभी सफेद कपड़ों में लिपटी एक स्त्री की शक्ल जहाज पर प्रगट हुई।

उसने अपनी ऑखें बन्द की, पानी की तरफ हाथ फैलाये और पानी ने उसका हुक्म माना। उसके हुक्म से हवा रुक गयी, लहरें शान्त हो गयीं और तूफान के बादल छॅट गये और सब कुछ शान्त हो गया। यह स्त्री दया की देवी[5] कुआन यिन थी।

जहाज़ के सारे यात्री आश्चर्य से उस दया की देवी कुआन यिन की तरफ देखते रह गये और एक एक कर के उसके पैरों पर पड़ गये और उसके सामने अपना सिर झुकाने लगे।

कुआन यिन जहाज़ के एक कोने से दूसरे कोने तक गयी और एक स्त्री की तरफ गयी जिसको बच्चे की आशा थी और जो जहाज़ के एक कोने में खड़ी थी।

वह स्त्री उस देवी को देख कर फुसफुसायी — "धन्यवाद।"

[5] Kuan Yin – Kuan Yin is the Chinese Goddess of Mercy

उसने उस स्त्री से कहा — "फौंग साई[6], तुमको मुझे धन्यवाद देने की जरूरत नहीं है क्योंकि तुम तो खुद ही एक ऐसे बच्चे को जन्म देने वाली हो जो इस नदी पर पुल बनायेगा।"

यह कहने के बाद कुआन यिन वहॉ से गायब हो गयी और फौंग साई के पास उसको बधाई देने के लिये काफी भीड़ इकट्ठा हो गयी।

फौंग साई कुआन यिन की यह बात सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और घर लौट गयी। कुछ दिन बाद ही उसने एक बेटे को जन्म दिया जिसका नाम उसने साई सियॉग[7] रखा।

साई सियॉग बड़ा हो कर एक बहुत ही अच्छा लड़का बना। वह अपने बड़ों का कहा मानता था। जब वह सात साल का हुआ तो वह अपनी मॉ की उसके छोटे से खेत पर सहायता करता था। जल्दी ही वह उस खेत को अपने आप सॅभालने के लायक भी हो गया।

हर साल उसके जन्म दिन की शाम को उसकी मॉ उससे कुआन यिन की भविष्यवाणी दोहराती थी — "याद रखना बेटे कि जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुमको लो यॉग नदी पर पुल बनाना है। कभी किसी को अपने काम के रास्ते में अड़चन मत डालने देना।"

[6] Fong Tsai – name of the mother of the boy Tsai Hsiang

[7] Tsai Hsiang – name of the son of Fong Tsai

हर साल साई सियॉग अपनी मॉ से कुआन यिन की यह भविष्यवाणी सुनता और अपने मन में यह पक्का इरादा करता कि वह कुआन यिन की इस भविष्यवाणी को जरूर पूरी करेगा।

साई सियॉग जब **30** साल का हुआ तब उसने एक इम्तिहान पास किया जिससे वह सरकार के लिये काम कर सकता था। वह वहॉ बहुत ही लगन से काम करता रहा और एक दिन वहॉ का वजीर[8] बन गया।

हालॉकि उसके पास बादशाह की दी हुई इज़्ज़त और पैसे की कोई कमी नहीं थी फिर भी वह अपने दिमाग में कुछ कुछ सोचता रहता था।

वह वहॉ के प्रान्तों की देख भाल बहुत अच्छे से करता था। वह वहॉ के हर प्रान्त के लोगों की परेशानियों को दूर करने की कोशिश करता था और इसी लिये किसानों से ले कर कुलीन लोगों तक सभी लोग उसकी एक सी इज़्ज़त करते थे।

वह हर साल बादशाह के सामने फूकीं प्रान्त[9] जाने का कोई न कोई बहाना रखता पर हर बार बादशाह अपने उस अक्लमन्द वजीर को अपने पास से कहीं जाने नहीं देता था।

[8] Translated for the word “Prime Minister”

[9] Fukien Province

एक शाम साई सियॉग अपने शाही बागीचे बैठा हुआ था कि उसने चींटियों की एक लाइन चट्टान में बने एक छेद की तरफ जाती देखी तो उसके दिमाग में एक तरकीब दौड़ गयी।

अगली सुबह उसने एक डंडी के ऊपर शहद लगाया और उसको ले कर शाही बागीचे में आया। जब उसने चारों तरफ देख कर यह पक्का किया कि वह वहॉ अकेला ही था तो उसने एक बड़े केले[10] के पत्ते पर चीनी भाषा के आठ अक्षर लिखे।

उन अक्षरों से उसने लिखा "साई सियॉग साई सियॉग अपना काम पूरा करने के लिये घर लौटो।"

फिर वह अपने कमरे में लौट आया। उस कमरे में से वह शाही बागीचा देख सकता था। उसने देखा कि पॉच मिनट के अन्दर अन्दर ही बहुत सारी चींटियॉ उस पत्ते पर उसका शहद खाने आ गयी थीं। आधा घंटे बाद बादशाह भी सुबह की सैर के लिये बागीचे के दरवाजे में घुसे।

बादशाह इधर उधर फूलों और पेड़ों को देखते घूम रहे थे कि उनकी निगाह बड़े केले के पेड़ के एक पत्ते पर पड़ी जिस पर

[10] Translated for the word "Plantain". See its picture above in both ripe and green forms. This is a big size banana-like tropical fruit, often double the length of normal banana, mostly found in Tamil Nadu, Kerala etc southern states of India. When it is green it is eaten as vegetable and in the form of chips, and when it is ripe it can be eaten like a fruit. In West African counties the ripe plantain is cut in 1" pieces and deep fried in oil too. There it is called "Dodo".

चींटियॉ वह आठ अक्षर की शक्ल में शहद खा रही थीं। उन्होंने वे शब्द ज़ोर से पढ़े — "साई सियॉग साई सियॉग अपना काम पूरा करने के लिये घर लौटो।"

यही वह पल था जिसका साई सियॉग इन्तजार कर रहा था। वह अपने कमरे से निकल कर बागीचे में भागा और बादशाह को झुक कर सलाम किया और बोला — "धन्यवाद योर मैजेस्टी। तो मैं कल घर वापस जाऊँ?"

बादशाह आश्चर्य से थोड़ा पीछे हट गये और साई सियॉग को अपने पैरों पर से उठने के लिये कहा और पूछा — "यह तुम क्या कह रहे हो साई? मैंने तो तुमको घर वापस जाने के लिये नहीं कहा। मैं तो केवल ये लिखे हुए शब्द ज़ोर से पढ़े थे।"

पर साई सियॉग तो हार मानने वालों में से नहीं था। वह अपना मामला बादशाह के सामने बेताबी से रखता ही रहा — "योर मैजेस्टी, राज्य का हर आदमी जानता है कि आपके कहे शब्द तो शाही हुक्म हैं और जब वे एक बार आपके मुँह से बोले गये तो उनका पालन तो होना ही चाहिये।"

अब बादशाह के पास और कोई चारा नहीं रह गया था सो उनको साई सियॉग की बात माननी ही पड़ी। न चाहते हुए भी उन्होंने अपने वजीर को दो महीने के लिये अपने घर जाने की

इजाज़त दे दी और कहा कि वह वहॉ चुआन चू गॉव[11] में मजिस्ट्रेट का काम करेगा।

साई सियॉग बहुत खुश हुआ और अपने घर चला गया। जिस दिन से वह अपने घर आया तभी से उसने बहुत सारे मजदूर लगवा कर उस नदी पर पुल बनवाने का काम शुरू कर दिया।

पर उस पुल की नींव में जो पत्थर डाले जा रहे थे वे ऐसे बहे चले जा रहे थे जैसे नदी के तेज़ बहाव में छोटे पत्थर बहे चले जाते हैं। वह वहॉ रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

समय कम था सो नाउम्मीद सा हो कर उसने समुद्र के ड्रैगन राजा[12] को यह प्रार्थना करते हुए एक चिट्ठी लिखी कि वह अपने तूफानी पानी को बस तीन दिन के लिये शान्त रखें।

यह चिट्ठी लिख कर साई सियॉग ने उस चिट्ठी को वजीर की सील से बन्द किया और उस चिट्ठी को ले कर समुद्री ड्रैगन राजा के पास ले जाने के लिये अपने मजदूरों में से एक आदमी ढूँढने के लिये गया जो उसको समुद्री ड्रैगन राजा के पास ले जा सके। वहॉ जा कर उसने उनसे पूछा समुद्र की तली तक कौन जायेगा।

[11] Chuan Chou Village

[12] Dragon King of the Sea – dragon pictures are found in many shapes. A most common picture is given here. See the picture above.

एक बदकिस्मत मजदूर सिया ते हई[13] ने यह सवाल कुछ गलत सुना और उसको लगा कि उसको मजिस्ट्रेट के सामने बुलाया जा रहा है सो वह चिल्लाया — "मैं यहॉ हूॅ, मैं यहॉ हूॅ।"

साई सियॉग ने उसको बुलाया और उससे कहा कि वह लो यॉग नदी की गहराइयों में जाये और जा कर वह चिट्ठी समुद्र के ड्रैगन राजा को दे दे। और उसने वह बन्द चिट्ठी उस आश्चर्य भरे आदमी के हाथ में पकड़ा दी।

दूसरे मजदूर सिया ते हई को नदी के कीचड़ भरे पानी की तरफ ले गये और उसको वहॉ अकेला छोड़ दिया। अॅधेरा होने लगा था।

जब सब लोग वहॉ से चले गये तो सिया ते हई अपने घुटनों पर बैठ गया और डर और घबराहट से रोने लगा। जब वह रोते रोते थक गया तो वह वहीं नदी के किनारे ही सो गया।

सपने में उसने देखा कि वह समुद्री ड्रैगन राजा के मोती और सीपी से बने एक बहुत बड़े कमरे में खड़ा हुआ था।

उसके दॉये हाथ को एक केंकड़ा[14] खड़ा हुआ अपने पैदल सिपाहियों को कुछ हुक्म सुना रहा था और उसके बॉये हाथ को समुद्री ड्रैगन राजा अपने सोने के सिंहासन पर बैठे हुए थे।

[13] Hsia Te Hai – name of a loborer

[14] Translated for the word "Crab". See its picture above.

सिया ते हई राजा के सिंहासन की तरफ दौड़ा और उनके सिंहासन के सामने जमीन पर लेट कर उनको सलाम किया और हकलाते हुए बोला — "मेरा नाम सिया ते हई है। यह चिट्ठी आपके लिये है समुद्री ड्रैगन, समुद्री ड्रैगन बादशाह।"

समुद्री ड्रैगन बादशाह ने हाथ बढ़ा कर उसके हाथ से वह चिट्ठी ले ली और उसको धीरे धीरे पढ़ा। पढ़ कर वह बोले — "जो कुछ भी वजीर ने लिखा है मैं वह कर सकता हूँ पर मैं पानी को केवल तीन दिन के लिये ही हटा सकता हूँ इससे ज़्यादा समय के लिये नहीं।"

उसके बाद समुद्री ड्रैगन बादशाह ने उसकी हथेली पर चीनी भाषा का एक अक्षर लिखा और इशारे से उसको वहाँ से जाने के लिये कहा। सिया ते हई बादशाह की तरफ देखे बिना ही वहाँ से जितनी जल्दी जा सकता था चल दिया।

सुबह की ठंडी कड़क हवा ने सिया ते हई को उसके सपने से जगा दिया। वह नदी के गीले किनारे से उठा तो उसको अपनी हथेली पर लिखा हुआ चीनी भाषा का वह एक अक्षर दिखायी दिया जो समुद्री ड्रैगन राजा ने उसकी हथेली पर लिख दिया था।

उस एक अक्षर को देख कर उसको अपने सपने की सारी घटनाऐं एक एक कर के याद आ गयीं। वह सुबह के धुँधलके में ही साई सियॉग के घर दौड़ गया। साई सियॉग उस समय सो रहा था।

उसने साई सियॉग के पहरेदारों को धक्का दिया और सीधा उसके सोने के कमरे में चला गया और खुशी से बोला — "मालिक मुझे आप अपनी नींद मे दखल डालने के लिये माफ करें पर मैं समुद्री ड्रैगन राजा से मिला और उन्होंने मुझे यह लिख कर दिया है।"

कहते हुए उसने अपनी हथेली वजीर के सामने बढ़ा कर उसके बिस्तर की सिल्क की चादर पर रख दी।

वजीर ने उसे पढ़ा — "**21**वें दिन यू बजे।"

सो उस महीने के **21**वें दिन शाम को **6** बजे चुआन चू[15] गॉव में एक बहुत ज़ोर की गड़गड़ाहट की आवाज सुनी गयी जैसे कि लो यॉग नदी का पानी किसी ने उसकी तली दिखाने के लिये वापस खींच लिया हो।

अपने औजार उठाने से पहले साई सियॉग और उसके मजदूरों ने कुछ अगर बत्तियॉ और कागज के नोट उस समुद्री ड्रैगन बादशाह की पूजा के लिये जलाये।

उसके बाद उन्होंने यह कसम खायी कि जब तक उनका काम खत्म नहीं हो जायेगा वे अपने औजार नहीं रखेंगे। तब कहीं जा कर साई सियॉग ने उनको काम शुरू करने का हुक्म दिया।

यह नदी एक मील चौड़ी थी और हालॉकि एक हजार मजदूर इस काम के लिये लगाये गये थे पर फिर भी पहले दिन के अन्त

[15] Chuan Chu village

तक पुल का केवल एक तिहाई हिस्सा ही पूरा हो सका। और खाना तो बिल्कुल ही खत्म हो गया था।

साई सियॉग ने अपने मजदूरों को कितना ही धमकाया पर उसके मजदूरों ने तब तक काम शुरू करने से मना कर दिया जब तक कि वे नया राशन नहीं देख लेते।

साई सियॉग तो यह सुन कर बहुत परेशान हो गया कि अब वह क्या करे क्योंकि उसके पास तो पैसे बिल्कुल ही खत्म हो गये थे और बिना खाना देखे वे मजदूर वापस काम पर जाने के लिये तैयार नहीं थे।

ऐसे समय में उसको दया की देवी कुआन यिन की याद आयी जिन्होंने उसकी मॉ की जान बचायी थी। बस वह तुरन्त ही घुटनों के बल बैठ गया और मन लगा कर उनकी प्रार्थना करने लगा।

"हे कुआन यिन, तुमने मेरी मॉ से कहा था कि मैं इस नदी पर पुल बनाऊॅगा और आज मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिये यहॉ मौजूद हूॅ पर मुझे अपने मजदूरों के खाने के लिये और पैसे चाहिये। हे दया की देवी मुझे अक्ल दो। मुझे इस समय तुम्हारी बहुत जरूरत है मेरी सहायता करो।"

अगले दिन लो यॉग नदी पर एक नाव प्रगट हुई जिसमें सफेद सिल्क के कपड़े पहने एक बहुत सुन्दर स्त्री बैठी हुई थी। उसके बारे में गॉव भर में बात फैल गयी और लोग उसको देखने के लिये वहॉ आने लगे।

उस स्त्री ने अपनी नाव उस भीड़ के पास लगा ली और उनकी धीमी फुसफुसाहट को अपने हाथ के इशारे से चुप कर दिया।

फिर वह बोली — "मैं उस आदमी से शादी करने का वायदा करती हूँ जो कोई मेरी गोद में एक सोने का या चॉदी का सिक्का डालेगा।"

जैसे ही उसने यह कहा कि लोगों ने उसके ऊपर सोने चॉदी के सिक्कों की बौछार कर दी और इतने सिक्के फेंके कि उसकी नाव डूबने लगी। पर आश्चर्य, उन गॉव वालों ने कितने भी सिक्के फेंके पर उनका एक भी सिक्का उस देवी की गोद में जा कर नहीं गिरा।

एक घंटे बाद जब वह नाव उन सिक्कों का बोझ नहीं सॅभाल सकी तो उस स्त्री ने उन गॉव वालों को उनके घर वापस भेज दिया।

पर जब साई सियॉग घर जाने के लिये मुड़ा तो उस स्त्री ने उसको अपने पास बुलाया और उससे कहा — "साई सियॉग, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली थी इसी लिये मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। लो यह सारा पैसा तुम्हारा है और इसको तुम मेरी भविष्यवाणी सच करने के लिये खर्च करो।"

कुआन यिन ने वह सारे सिक्के नाव में से निकाल कर घास पर साई सियॉग के पैरों के पास फेंक दिये और फिर बिना एक शब्द बोले वहॉ से गायब हो गयी।

बिना एक पल की देर किये साई सियॉग ने भी अपने मजदूरों को काम पर वापस भेज दिया। उसकी मेहनत और पक्के इरादों से उसके मजदूर बराबर काम करते रहे। और समुद्री ड्रैगन बादशाह के नदी में पानी छोड़ने से एक घंटा पहले ही उस नदी पर पुल बन चुका था। इस तरह साई सियॉग ने उस नदी पर पुल बनाया।

3 सबसे अच्छी इच्छा[16]

वरदान की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के डेनमार्क देश की है। इसमें तीन भाई हैं। जिनमें से हर एक के पास एक एक वरदान है। इन वरदानों के साथ वे तीनों अपने सफर पर निकलते हैं। इन तीनों भाइयों ने अपने अपने वरदानों का कैसे इस्तेमाल किया इसी के बारे में है यूरोप के डेनमार्क देश की यह लोकप्रिय लोक कथा।

कुछ समय पुरानी बात है कि डेनमार्क देश में तीन भाई रहते थे। यह तो पता नहीं कि यह सब कैसे हुआ पर एक बार उन तीनों भाइयों को एक एक वरदान मिला।

दोनों बड़े भाइयों ने तो यह वरदान मॉगने में ज़रा भी देर नहीं की। उन्होंने तुरन्त ही यह इच्छा प्रगट की कि वे जब भी अपनी जेब में हाथ डालें तो उन्हें उसमें धन मिल जाये, यानी कि जब भी उनको पैसे की जरूरत हो तो उनकी जेब में हमेशा पैसे रहें।

लेकिन सबसे छोटा भाई जिसका नाम बूट्स[17] था, उसने किसी दूसरे प्रकार की ही इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छा थी कि जो भी स्त्री उसे देखे वही उसे प्रेम करने लगे। उन सबकी इच्छा पूरी हुई। पर कैसे□इसके लिये अब आगे की कहानी सुनो –

[16] The Best Wish – a folktale from Denmark, Europe

[17] Boots – name of the youngest brother.

इन इच्छाओं के पाने के बाद दोनों बड़े भाइयों ने दुनियॉ देखने का प्रोग्राम बनाया। बूट्स ने उनसे पूछा कि क्या वह भी उनके साथ दुनियॉ घूमने चल सकता था।

परन्तु उन्होंने उसकी एक न सुनी और बोले — "हम तो जहॉ भी जायेंगे राजकुमार समझे जायेंगे मगर तुम एक बेवकूफ लड़के समझे जाओगे। तुम्हारे पास तो एक पेनी भी नहीं है और न ही कभी होगी। फिर तुम्हारी देखभाल भी कौन करेगा?"

पर बूट्स ने जिद की "कुछ भी सही, पर मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा।"

काफी प्रार्थना के बाद वे दोनों बड़े भाई उसको अपने साथ ले चलने के लिये मान गये पर साथ में उन्होंने एक शर्त लगा दी कि वह उनका नौकर बन कर उनके साथ चलेगा। बूट्स मान गया सो वे तीनों चल पड़े।

एक दो दिन का सफर करने के बाद वे लोग एक सराय में आये।

दोनों बड़े भाइयों के पास तो खूब पैसा था सो उन्होंने बड़े शानदार खाने का आर्डर दिया, जैसे मुर्गा, मछली, गोश्त, ब्रान्डी आदि, मगर बूट्स को किसी ने अन्दर भी नहीं जाने दिया। उसे गाड़ी घोड़े और सामान की देखभाल के लिये सराय के बाहर ही छोड़ दिया गया।

उसने घोड़ों को अस्तबल में बॉधा, गाड़ी को धोया और फिर घोड़ों के खाने के लिये घास ले कर गया। जब वह यह सब कर रहा था तो सराय के मालिक की पत्नी उसे खिड़की से देख रही थी।

उसकी ऑखें उस सुन्दर लड़के के चेहरे से ही नहीं हट पा रही थीं हालॉकि वह तो मेहमानों का केवल नौकर ही था। जितनी अधिक देर तक वह उसे देखती रही उसे वह उतना ही अधिक सुन्दर दिखायी दे रहा था।

सराय का मालिक बोला — "अरे, तुम वहॉ खिड़की पर खड़ी खड़ी क्या कर रही हो, ज़रा जा कर देखो कि रसोई में खाना ठीक से बन रहा है कि नहीं। हमारे शाही मेहमान खाने का इन्तजार कर रहे हैं।"

पत्नी उधर से अपनी ऑख हटाये बिना ही बोली — "ओह, अगर उनको खाना पसन्द नहीं भी आया तो न सही, मैं क्या करूॅ। मैंने अभी तक इतना सुन्दर लड़का पहले कभी नहीं देखा। क्यों न हम उसको रसोई में बुला कर कुछ अच्छा सा खाना उसको खाने के लिये दे दें। ऐसा लगता है कि बेचारा काफी मेहनत करता है।"

"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? रसोई में जाओ और अपना काम देखो।"

पत्नी ने पति से लड़ना ठीक नहीं समझा पर उसे एक विचार आया और वह एक कीमती चीज़ अपने ऐप्रन में छिपा कर सराय से बाहर आयी।

यह कीमती चीज़ थी एक कैंची। यह एक जादुई कैंची थी। इस जादुई कैंची का काम यह था कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता था।

वह बूट्स के पास आयी और बोली — "यह कैंची तुम रखो क्योंकि तुम बहुत सुन्दर हो। इस कैंची की खासियत यह है कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता है।"

बूट्स ने उसे नम्रता से धन्यवाद दिया और उससे वह कैंची ले कर अपनी जेब में रख ली।

बूट्स के भाइयों का जब खाना खत्म हो गया तो वे फिर चलने के लिये तैयार हुए और बूट्स गाड़ी के पीछे नौकर की जगह पर खड़ा हुआ।

फिर वे एक दूसरी सराय में आये। वे दोनों तो सराय के अन्दर चले गये और बूट्स बाहर ही सामान आदि की देखभाल करने के लिये खड़ा रहा।

भाइयों ने बूट्स को बताया कि "अगर कोई तुमसे यह पूछे कि तुम किसके नौकर हो तो तुम कहना कि "मैं दो विदेशी राजकुमारों का नौकर हूँ।"

"ठीक है।"

इस बार भी वही हुआ जो पिछली सराय में हुआ था। सराय के मालिक की पत्नी ने जब उसे देखा तो वह तो बस उसे देखती ही रह गयी।

पति ने जब अपनी पत्नी को बाहर झाँकते देखा तो उसने भी उससे कहा — "वहाँ तुम दरवाजे पर क्यों खड़ी हो? जाओ और जा कर अपनी रसोई देखो। हमारी सराय में रोज रोज विदेशी राजकुमार नहीं आया करते।"

और जब वह अन्दर नहीं गयी तो वह उसको उसकी गरदन पकड़ कर अन्दर ले गया।

इस बार सराय के मालिक की पत्नी ने उसको एक जादुई मेजपोश दिया जिसकी खूबी यह थी कि उसे बिछाने पर जो भी खाना सोचो वही खाना उस मेजपोश पर आ जाता था।

तीसरी सराय में भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही उस तीसरी सराय के मालिक की पत्नी ने बूट्स को देखा तो वह भी उसकी तरफ आकर्षित हो गयी।

उसने उसको लकड़ी की एक टोंटी दी जिसकी खूबी यह थी कि उसे खोलने पर जो भी पीने की चीज़ चाहो वही मिल सकती थी।

बूट्स ने उसको भी नम्रता पूर्वक धन्यवाद दिया और वह टोंटी उससे ले कर अपनी जेब में रख ली। एक बार फिर से वे लोग कड़ी सरदी में अपने सफर पर चल दिये।

अबकी बार वे एक राजा के महल में पहुँचे। दोनों बड़े भाइयों ने अपना परिचय बादशाह के लड़कों के रूप में दिया क्योंकि उनके पास खूब पैसा था और बहुत कीमती कपड़े थे। राजा ने उनका बहुत ज़ोर शोर से स्वागत किया और राजमहल में उन्हें इज़्ज़त से ठहराया गया।

मगर बूट्स बेचारा उन्हीं फटे कपड़ों में था जिनको पहन कर वह घर से निकला था। उस बेचारे की जेब में तो एक पेनी भी नहीं थी।

उसको राजा के नौकरों ने नाव में सवार करा कर एक टापू पर भेज दिया क्योंकि वहाँ का यही नियम था कि जो भी गरीब या भिखारी वहाँ आता उसको उसी टापू पर भेज दिया जाता।

राजा ने यह नियम इसलिये बना रखा था क्योंकि वह अपने स्वादिष्ट और अच्छे खाने और पहनने के बढ़िया कपड़ों को गरीबों की नजर से गन्दा नहीं करना चाहता था।

बचा हुआ खाना जो केवल ज़िन्दा रहने के लिये ही काफी होता था भिखारियों से और गरीबों से भरे उस टापू पर भेज दिया जाता था।

घमंडी भाइयों ने अपने भाई को ऐसी जगह जाते देखा मगर अनदेखा कर दिया, बल्कि वे लोग खुश ही हुए कि अच्छा हुआ उन्हें उससे छुटकारा मिल गया।

जब बूट्स उस टापू पर पहुँचा और उसने वहाँ के लोगों की हालत देखी तो उसे अपनी तीनों कीमती चीज़ों की याद आयी। सबसे पहले उसने कैंची निकाली और उसे हवा में चलाना शुरू कर दिया और हवा में से बढ़िया बढ़िया कपड़े कट कट कर गिरने लगे।

जल्दी ही भिखारियों के पास राजा और उन घमंडी भाइयों से भी अधिक कीमती और सुन्दर कपड़े आ गये। उन कपड़ों को पहन कर वे सब बहुत खुश हुए और नाचने लगे पर वे अब अपनी भूख के लिये क्या करें।

अब बूट्स ने अपना मेजपोश निकाला और उसे बिछा दिया। अब क्या था नाम लेते ही मेजपोश पर तरह तरह के स्वाददार खानों का ढेर लग गया।

भिखारियों ने ऐसा खाना ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने खूब खाया और खूब खिलाया। ऐसी दावत तो राजा के महल में भी शायद कभी नहीं हुई होगी जैसी उन भिखारियों के टापू पर हो रही थी।

"अब तुम्हें प्यास भी लग रही होगी, सो लो जो चाहो पियो।" कह कर बूट्स ने अपनी लकड़ी की टोंटी निकाली और उसे खोल दिया। तरह तरह की शराब उसमें से निकलने लगी।

इस प्रकार भिखारियों ने बूट्स की मेहरबानी से वह सब कुछ पाया जो किसी राजा को भी नसीब होना मुश्किल था। क्या तुम सोच सकते हो कि यह सब कुछ देख कर वहॉ क्या खुशियॉ मनायीं जा रही होंगी?

अगली सुबह राजा के नौकर भिखारियों के लिये खाना ले कर आये। वे दलिया आदि की खुरचनें, कुछ पनीर के टुकड़े और डबल रोटी के सूखे टुकड़े लाये थे। लेकिन आज भिखारियों ने उनको छुआ तक नहीं।

यह देख कर राजा के नौकरों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस खाने के ऊपर वे रोज टूट पड़ते थे आज वे उसको छूने भी नहीं आये।

लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य उन्हें तब हुआ जब उन्होंने देखा कि सारे भिखारी राजकुमारों जैसे शाही कपड़े पहने हुए हैं। राजा के नौकरों को लगा कि वे शायद किसी गलत टापू पर आ गये हैं। पर नहीं, यह तो वही टापू था जिस पर वे रोज आते थे।

फिर उन्होंने सोचा कि शायद यह कल वाले भिखारी की करामात रही हो। पर यह सब उसने कैसे किया होगा यह उनके

दिमाग में नहीं आया। वे महल लौट गये और उन्होंने टापू के बारे में कई सारी बातें राजा को बतायीं।

एक बोला — "उनको इतना घमंड हो गया है कि उन्होंने आज के खाने को छुआ तक नहीं।"

दूसरा बोला — "उस कल वाले लड़के ने सबको शाही कपड़े पहनने को दे दिये हैं। टापू पर रहने वालों का कहना है कि उस लड़के के पास एक ऐसी कैंची है जो हवा में चलाने से सिल्क और साटन के कपड़े काटती है।"

तीसरा बोला — "उनके पास बहुत तरह का खाना और शराब पड़ी थी इसलिये उन्होंने यह खाना छुआ तक नहीं।"

एक और बोला — "और मैंने तो उस नये भिखारी की जेब में एक टोंटी जैसी चीज़ भी देखी थी।"

राजा के एक बेटी थी। उसके कानों में भी ये बातें पड़ीं तो उसके मन में इस लड़के को देखने की इच्छा हो आयी कि अगर वह कैंची उसे बेच दे तो वह भी सिल्क और साटन के कपड़े पहन पायेगी।

उसने अपने पिता को चैन नहीं लेने दिया और राजा को उस लड़के को बुलाने के लिये एक आदमी उस टापू पर भेजना ही पड़ा।

जब वह लड़का महल में आया तो राजकुमारी ने देखा कि वह किसी राजकुमार से कम नहीं लग रहा था। उसने पूछा क्या यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है?

बूट्स बोला कि हॉ यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है। उसने अपनी जेब से जादू की कैंची निकाली और हवा में चलाने लगा। सिल्क, साटन और मखमल के कपड़ों के ढेर लग गये, पीले, हरे, गुलाबी, नीले।

राजकुमारी ने कहा — "यह कैंची हमें बेच दो। तुम जो चाहोगे हम तुम्हें वही देंगे।"

बूट्स ने कहा — "नहीं, मैं इसे नहीं बेच सकता क्योंकि ऐसी कैंची मुझे दोबारा नहीं मिल सकती।"

जब वे लोग आपस में सौदेबाजी कर रहे थे तो राजकुमारी के साथ भी वही हुआ जो उन तीनों स्त्रियों यानी सराय के मालिकों की पत्नियों के साथ हुआ था।

उसे लगा कि इतना सुन्दर लड़का तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। उसे लगा कि उस लड़के के बाल पीली साटन से भी ज़्यादा पीले हैं, उसकी ऑखें नीली मखमल से भी ज़्यादा नीली हैं और उसके गाल गुलाबी सिल्क से भी ज़्यादा गुलाबी हैं।

वह उसको जाने नहीं देना चाहती थी सो उसने सौदा छोड़ कर उससे कैंची देने के लिये प्रार्थना करनी शुरू कर दी जो बूट्स उसको किसी तरह भी देने के लिये राजी नहीं था। उसने उस लड़के से पूछा कि आखिर तुम्हें इसके लिये चाहिये क्या।

बूट्स ने कहा — "मैं अगर एक रात तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर फर्श पर सो जाऊॅ तो यह कैंची मैं तुम्हें ऐसे ही दे दूॅगा। मैं तुम्हें

कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा लेकिन अगर तुम्हें मुझसे डर लगे तो तुम अपने भरोसे के दो चौकीदार रख सकती हो और रात भर कमरे में रोशनी भी रहने दे सकती हो।"

राजकुमारी को इसमें कोई परेशानी नहीं थी। सो बूट्स राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर रात भर सोया, दो चौकीदार वहाँ रात भर रहे और कमरे में रोशनी रही।

पर राजकुमारी को नींद नहीं आयी क्योंकि वह जब भी अपनी आँखें बन्द करती उसके सामने बूट्स की सूरत नाचने लगती और फिर वह अपनी आँखें खोल लेती। रात भर यही चलता रहा। वह उसे उन सब लड़कों से सुन्दर लग रहा था जो अब तक उससे शादी के उम्मीदवार रह चुके थे।

अगले दिन राजकुमारी ने कैंची ले ली और बूट्स को भिखारियों के टापू पर वापस भेज दिया। अब उसे कैंची से कोई काम नहीं था बस उसके मन में तो बूट्स की सुन्दर सूरत बसी हुई थी।

सो अब उसने उस अच्छे खाने के बारे में सोचा जो उस टापू पर बूट्स ने वहाँ के भिखारियों को दिया था। वह उसकी तह तक भी पहुँचना चाहती थी। सो बूट्स को फिर महल में लाया गया।

जब राजकुमारी ने उन बढ़िया खानों के बारे में उससे पूछा तो उसने उसको मेजपोश के बारे में बताया और साथ में यह भी कहा कि वह उसको बेचेगा नहीं, लेकिन अपनी पुरानी शर्त पर उसको ऐसे ही दे सकता हैं।

राजकुमारी राजी हो गयी और बूट्स पहले दिन की तरह से फिर वैसे ही राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर सोया।

इस रात राजकुमारी को और भी कम नींद आयी। वह रात भर बूट्स का चेहरा अपनी ऑखों के सामने देखती रही और फिर भी उसे रात छोटी लगी। अगले दिन बूट्स ने अपना जादू का मेजपोश राजकुमारी को दे दिया।

राजकुमारी ने राजा से बूट्स को महल में रखने की जिद की तो राजा ने कहा — "किसी चीज़ की कोई हद भी तो होती है, हम इस तरीके से उसे यहॉ नहीं रख सकते। उसे टापू पर जाना ही होगा।"

और अगले दिन राजकुमारी की इच्छा के खिलाफ उसको फिर उसी टापू पर भेज दिया गया। जाते जाते राजकुमारी से उसने कहा कि उसको उन दो राजकुमारों से अच्छा व्यवहार करना चाहिये जो उनके महल में ठहरे हुए हैं।

अबकी बार राजकुमारी को उसकी शराब की याद आयी तो वह फिर अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी, उसके पास अभी एक चीज़ और है जो मेरे पास होनी चाहिये इसलिये मेहरबानी करके उसे एक बार और बुला दीजिये।"

राजा ने अनमने मन से उसको एक बार और बुलवा दिया। इस बार जब बूट्स आया तो राजा ने भी उनकी बातें सुनी।

राजकुमारी ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई जादुई टोंटी भी है?"

बूट्स ने फिर वही जवाब दिया — "हॉ है। अगर राजा मुझे अपना आधा राज्य भी दे दें तो भी मैं उसे नहीं बेचूँगा पर अगर तुम मुझसे शादी करने को तैयार हो तो मैं तुमको वह ऐसे ही दे सकता हूँ।"

राजकुमारी मुँह फेर कर हँसी। फिर उसने अपने पिता की ओर देखा। पिता ने भी अपनी बेटी की ओर देखा तो उसको लगा कि उसकी बेटी इस लड़के को प्यार करती थी।

राजा ने बेटी से कहा — "ठीक है, हम तुम्हारी शादी इस लड़के से कर देंगे क्योंकि इसके पास ऐसी चीज़ें हैं जिनकी वजह से वह हमारे जितना ही धनी है।"

बस फिर क्या था बूट्स और राजकुमारी की शादी हो गयी। राजा ने अपना आधा राज्य उन दोनों को दे दिया। उसके भाइयों को भिखारियों के टापू पर भेज दिया गया। वे वहॉ उस टापू पर धन का क्या करते क्योंकि वहॉ तो खरीदने को कुछ था ही नहीं।

अगर बूट्स ने मेहरबानी करके कोई नाव उन्हें लेने नहीं भेजी होगी तो हमें यकीन है कि वे लोग अभी भी वहीं होंगे। पर हम आशा करते हैं कि बूट्स ने उन्हें जरूर माफ कर दिया होगा। पर जब तक वहॉ बूट्स का राज्य रहा उसने और उसकी रानी ने फिर किसी और को उस टापू पर नहीं भेजा।

4 ताश खेलने वाला–1[18]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में स्थित टापुओं पर बसे लोगों में कही सुनी जाती है। ताश खेलने वाले की यह लोक कथा एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है। इसमें जीसस एक ताश खेलने वाले को वरदान दे कर कैसे फॅस जाते हैं यह देखने वाली बात है। तो आओ पढ़ते हैं यह कथा हिन्दी में।

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते। वह उनके साथ ताश खेलता और हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – वह बच्चा हो या बड़ा या कोई और, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान जाता होता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह बच्चा बेचारा तुरन्त ही हार जाता और वह उसके पैसे ले लेता।

[18] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Africa. Adapted from the book : "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard.

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके पास एक बरतन था। उसके उस बरतन में छह–सात लोगों का खाना तो बन ही जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बरतन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के **11** बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल **11** बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन वहॉ रहने वालों में से एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को यहॉ से ले जाओ। वह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। सबके साथ ताश खेलता है और सबको हरा देता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें तो।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर भगवान से मिलता हूँ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवन, मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है।

वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे आता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता और बच्चा हो या बड़ा सबसे ताश खेल कर उनके पैसे ले लेता है।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हाँ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह यहाँ जरूर आयेगा। मैं खुद देखने आता हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे कह रहे हो क्या यह सब सच है?"

भगवान ने "होली घोस्ट"[19] और सेन्ट पीटर[20] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो

[19] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[20] Saint Peter (Simon Peter) was one of the twelve Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven. See the names of Jesus' twelve disciples at the end of the book.

कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमें उसे धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पॉच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — "हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा कितना छोटा सा घर है। यह मेरा खाना बनाने का बरतन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और फिर हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बरतन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बरतन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बरतन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बरतन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उस ताश खेलने वाले से बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे बरताव में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको वहाँ खाने और सोने के कितने पैसे दे दें।

वह बोला — "जो थोड़ा बहुत मेरे पास था उसी में से तुम लोगों ने यहाँ खा पी लिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी सी जगह में सो भी लिये। और मेरे ख्याल से तो तुम लोग ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। सो इस सबका उनको कोई पैसा देने की कोई जरूरत नहीं है।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये। पर बस अब यह बता दो कि इस सब का हम तुम्हें कितना पैसा दे दें।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही माँग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा माँगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। चलो, मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह माँगता हूँ कि जो कोई भी उस बैन्च पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "अब तुम मुझसे भी कुछ माँग लो।"

"अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या माँगू?" फिर कुछ सोचते हुए बोला — "अच्छा ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह उस दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहाँ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये जब तक मैं उसको वहाँ से न हटाऊँ।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेन्ट पीटर की बारी थी। उन्होंने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या माँगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। तुम वह सन्तरे का पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहूँ।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ दिनों बाद भगवान ने अपने एक मृत्यु दूत[21] को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे बुलाया ही क्यों है?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

[21] Translated for the word "Death Angel".

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहॉ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूॅ।"

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की बहुत कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुम्हें यहॉ से नहीं उठाऊॅगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया वरना अपने आप तो वहॉ से वह कभी उठ ही नहीं सकता था। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था मैं वहॉ इसलिये बैठा था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद तो मैं वहॉ पर चिपक गया।

मैं तो वहॉ से उठ ही नहीं सका जब तक उसने मुझे अपने आप नहीं उठाया और उसने मुझे तब तक उठाया नहीं जब तक उसने मुझसे यह वायदा नहीं ले लिया कि मैं उसे आपके नहीं ले जाऊॅगा।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुक्म देता हूॅ और तुम मेरे हुक्म का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर ही आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। मैंने कह दिया न।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहाँ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहाँ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हाँ हाँ। ठीक है। तुम अगर बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहाँ खड़ा हुआ तो वह तो वहाँ उसके घर के दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको मेरे साथ चलना है। अभी।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मैं जा कर यह बात भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहॉ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहॉ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहॉ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको अपने साथ बिल्कुल नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहॉ से चले जाओ। अब तुम उस दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहॉ से चला गया। वह वहॉ से भगवान के पास पहुॅचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर से बिना ताश खेलने वाले को लिये आ गये?"

"भगवन मैं बताता हूॅ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूॅ कि तुम वहॉ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं भगवन इस बार मैं उसकी बैन्च पर नहीं बैठा बल्कि उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फॅस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फॅसने के लिये भेजा था। मैने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता भगवन मैं उसके दरवाजे में फॅस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊॅगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूॅ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहॉ से। और यह आखिरी बार है। अबकी बार उसको ले कर ही आना है। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह मृत्यु दूत फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहाँ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तो तुमको हर हाल में चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है अबकी बार तो तुमको चलना ही है। सुना तुमने?"

"अगर तुम उस बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो। अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या वहाँ? ताकि फिर मैं वहाँ से हिल भी न सकूँ? नहीं नहीं बस तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देख रहे हो न। जब तक मैं तैयार होता हूँ तुम इस पेड़ पर चढ़

जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो अपने भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुँच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूँ। मैं अभी आता हूँ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूँ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूँ। जब मैं तय कर लूँगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊँगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आज़ाद करूँगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊँ।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुमने क्या कहा कि भगवान ने कहा है कि मैं लोगों को परेशान करता हूँ? मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूँ कि मैं जा रहा हूँ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। तुम मुझे ले जाओगे इसलिये मैं तुम्हें यहाँ से जाने भी नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहाँ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहाँ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह छोड़ ही नहीं रहा था।

फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहाँ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं। और तुम उसको यहाँ ला ही नहीं पा रहे।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहाँ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहाँ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको यहाँ से ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है ठीक है, अगर मुझको तुम्हें ले कर जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते तो ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपने ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[22]

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[23] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ ज़रा एक ताश की एक बाज़ी[24] खेल लूँ। अभी चलता हूँ।"

मृत्यु दूत बोला — "नहीं मुझे बहुत देर हो जायेगी। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाज़ी।"

कह कर वह ग्रैन इ्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — "आजा एक बाज़ी खेलते हैं।"

---

[22] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer' tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[23] Gran Dyab – Devil

[24] Translated for the word "Deal"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आ न ग्रैन इ्याब, एक बाज़ी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है। मुझे तो यहाँ भी मरना वहाँ भी मरना।"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और अपने बारह छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को उससे ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं जीत गया न? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

दोनों चल दिये।

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेन्ट पीटर खड़ा हुआ था। मृत्यु दूत सेन्ट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — "तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "और यह इसके कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है जब यह यहॉ आ रहा था तो रास्ते में एक ताश की बाजी खेला और उसमें यह जीत गया।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ। यह ग्रैन इ्याब के साथ खेला और उससे इसने उसके बारह छोटे शैतान जीत लिये।"

सेन्ट पीटर ने फिर पूछा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूँ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेन्ट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहॉ अन्दर कोई भी शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहाँ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूँ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

फिर वह बैठ गया और सेन्ट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह माँगने आये थे? तुम लोग तीन थे। है न?"

सेन्ट पीटर बोले — "हाँ, उनमें से एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने तुम्हारे लिये चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहाँ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहाँ से चला गया क्योंकि सेन्ट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहा था।

5 ताश खेलने वाला–2[25]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "एक दिन काइस्ट को बुलाओ ताकि हम उनको दोपहर का खाना खिला सकें।"

उसकी पत्नी ने काइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। काइस्ट ने कहा "ठीक है मैं आऊँगा।" सो दोपहर को काइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — "मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।"

काइस्ट बोले — "मेरा ख्याल है कि होगी। नहीं तो यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।"

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। काइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज़्यादा थी।

[25] The Cardplayer-2 – a folktale from Greece, Europe, translated by Nick Nicholas. Adapted from the Web Site http://mw.lojban.org/papri/cardplayer

खाना खाने के बाद काइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह काइस्ट से क्या चाहता था। काइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।

पर ताश खेलने वाले ने कहा — "मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

काइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

काइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — "नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

काइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

इस बार उसने कहा — "स्वर्ग का राज्य।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट यह कह कर वहॉ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा[26] दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुॅचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत[27] भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — "तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। मैं चलता हूॅ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ चलता हूॅ।"

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूॅ पर जब मैं चाहूॅगा तभी आऊॅगा उससे पहले नहीं।" और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

[26] Translated for the word "Crucified".

[27] Translated for the word "Angel"

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — "मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूँ और तुम्हारे साथ चलता हूँ।" कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहाँ हैडेस[28] अपने बारह छोटे साथियों के साथ था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — "मैं तुमसे ताश की एक बाज़ी खेलना चाहता हूँ। अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊँगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी दे देना।"

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब क्राइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर वहाँ से चलता बना।

अब वह स्वर्ग आया। जब क्राइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — "मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।"

वह आदमी बोला — "मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग आये थे। मैं भी अपने साथ बारह लोगों को ले कर आया हूँ।"

[28] Hades is the Devil

यह सुन कर क्राइस्ट ने सारे तेरह लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी। इस तरह शैतान भी स्वर्ग चले गये।

6 बोतल में बन्द मौत[29]

वरदानों की यह लोक कथा इटली देश के सिसिली द्वीप के पलेरमो प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बहुत ही अमीर और दयालु सराय वाला था जिसने अपनी सराय के आगे एक साइन बोर्ड लगा रखा था। उसके ऊपर लिखा था "मेरी सराय में आने वाले को खाना मुफ्त"।

सो सारा दिन लोग उसकी सराय में आते रहते थे और वह सब को मुफ्त खाना खिलाता रहता था।

एक बार जीसस और उनके बारह अपोसिल्स भी उस शहर में आये। उन्होंने भी वह साइन बोर्ड पढ़ा तो सेन्ट थोमस[30] बोला — "मालिक, जब तक मैं अपनी ऑखों से देख न लूँ और अपने हाथों से छू कर महसूस न कर लूँ तब तक मैं किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। सो चलिये अन्दर चलते हैं।"

सो जीसस और सब अपोसिल्स उस सराय के अन्दर गये। उन्होंने सबने वहॉ खूब खाया और खूब पिया। सराय के मालिक ने भी उनका शाही स्वागत किया।

---

[29] Jesus and St Peter in Sicily (Story No 165) – a folktale from Italy from its Palermo area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

[30] St Thomas was one of the four disciples of Jesus who has written one of the four Books of the New Testament Bible. Jesus had Twelve Apostles. See the list of the Jesus' Twelve Apostles at the end of this book.

वहॉ से चलने से पहले सेन्ट थोमस बोला — "ओ भले आदमी, तुम मालिक से कोई चीज़ क्यों नहीं मॉग लेते?"

सो उस सराय वाले ने जीसस से कहा — "मालिक, मेरे घर में एक अंजीर का पेड़ है पर मैं उस पेड़ की एक भी अंजीर नहीं खा पाता। जैसे ही वे पकती है बच्चे आ जाते हैं और वे सारी अंजीरें खा जाते हैं। अब मैं यह चाहता हूॅ कि आप ऐसा कुछ कर दें कि जो भी उस पेड़ पर चढ़े वह मेरी इजाज़त के बिना नीचे न आ सके।"

जीसस ने कहा — "ऐसा ही होगा।" और पेड़ को वैसा ही आशीर्वाद दे दिया।

अगली सुबह पहले चोर का उस पेड़ से हाथ चिपक गया, दूसरे का पैर चिपक गया और तीसरे का तो सिर ही दो डालियों के बीच फॅस गया और वह उसे उनमें से निकाल ही नहीं सका।

जब सराय वाले ने उनको इस तरह पेड़ से चिपके देखा तो उसने उनको नीचे उतारा और उनकी अच्छी पिटायी कर के उनको छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सबको पेड़ के इस गुण के बारे में पता चल गया तो छोटे बच्चे तो उस पेड़ के पास आते ही नहीं थे बड़े भी उस पेड़ से दूर रहने लगे। अब सराय वाला आराम से रह सकता था और अपने पेड़ की अंजीर खा सकता था।

इस तरह सालों गुजर गये। वह पेड़ बूढ़ा हो गया। अब उस पर फल नहीं आते थे। सराय वाले ने एक लकड़ी काटने वाले को उस पेड़ को गिराने के लिये बुलाया।

उसने पेड़ गिरा दिया तो सराय वाले ने उससे पूछा — "क्या तुम मेरे लिये इस पेड़ की लकड़ी की एक बोतल बना सकते हो जो इतनी बड़ी हो कि उसमें एक आदमी घुस जाये?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" और लकड़ी काटने वाले ने उसके लिये उस पेड़ की लकड़ी की उतनी बड़ी एक बोतल बना दी।

उस बोतल में उस पेड़ की लकड़ी के जादुई गुण आ गये थे – वह यह कि जो कोई भी उस बोतल में घुसता तो वह बिना सराय वाले की इजाज़त के बाहर ही नहीं आ सकता था।

अब वह सराय वाला भी बूढ़ा हो चला था। एक दिन मौत उसको लेने के लिये आयी तो वह आदमी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। चलो चलते हैं। पर तुम्हारे साथ जाने से पहले क्या तुम मेरा एक काम करोगे?

मेरे पास एक बोतल है जिसमें शराब भरी हुई है। पर उसमें एक मक्खी पड़ गयी है। अब उस शराब को मैं पी ही नहीं सकता। क्या तुम उसमें कूद कर उस मक्खी को निकाल दोगे ताकि मैं मरने से पहले उस बोतल में से कम से कम एक घूँट शराब तो पी चलूँ।"

"अरे तुम मुझसे बस इतना सा काम करवाना चाह रहे हो? यह तो कुछ भी नहीं मैं अभी करती हूँ।" कह कर मौत उस बोतल में कूद पड़ी। उसके बोतल में कूदते ही सराय वाले ने उस बोतल के मुँह पर डाट[31] लगा दी।

फिर वह मौत से बोला — "बस अब तुम मेरे पास रहोगी और तुम इसमें से कभी भी नहीं निकल पाओगी।"

मौत तो अब सराय वाले के पंजे में फँस चुकी थी सो दुनियाँ में अब किसी को मौत ही नहीं आ रही थी। सब ज़िन्दा थे। अब सब जगह पैरों तक लम्बी सफेद दाढ़ी वाले लोग दिखायी पड़ते थे।

यह बात अपोसिल्स ने भी देखी और जीसस को इसका इशारा किया। जीसस ने आखिर उस सराय वाले के पास जा कर बात करने का इरादा किया।

वह उस सराय वाले के पास गये और उससे कहा — "भाई, क्या तुम सोचते हो कि यह ठीक है कि तुमने मौत को इस तरह से सालों से बन्द कर रखा है?

ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जो बूढ़े होने की वजह से कमजोर हो गये हैं या जो अपनी ज़िन्दगी को घसीट रहे हैं और बिना मौत के ठीक नहीं हो सकते कि उन बेचारे लोगों का क्या होगा?"

[31] Translated for the word "Cork". See its picture above.

सराय वाले ने जवाब दिया — "मालिक, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं मौत को बाहर निकाल दूँ? तब आप मुझसे वायदा कीजिये कि मरने के बाद आप मुझे स्वर्ग भेज देंगे तभी मैं मौत को इस बोतल में से बाहर निकालूँगा।"

जीसस ने सोचा अब मैं क्या करूँ? अगर मैं उसको इस बात के लिये मना कर दूँ तब तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फँस जाऊँगा क्योंकि मौत इस बोतल में ही बन्द रह कर किसी को भी नहीं आ पायेगी और यह ठीक नहीं है इसलिये जीसस ने कहा — "जैसा तुम चाहते हो ऐसा ही होगा।"

जीसस से यह वायदा ले कर सराय वाले ने वह बोतल खोल दी और मौत को आजाद कर दिया।

इसके बाद सराय वाले को कुछ और साल ज़िन्दा रहने दिया गया। बाद में मौत फिर वापस आयी और उसको स्वर्ग ले गयी। इस तरह सराय वाला मौत को बोतल में बन्द कर के स्वर्ग चला गया।

7 सॉप[32]

वरदानों की यह लोक कथा यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। वहॉ के बच्चे इस कहानी को बड़े चाव से सुनते सुनाते हैं।

एक बार एक किसान था जो घास काटने के लिये रोज बाहर जाया करता था। उसके तीन बेटियॉ थीं। उनमें से उसकी एक बेटी उसके लिये रोज खाना ले कर जाया करती थी। उसकी बाकी की दो बेटियॉ पीछे घर में रह कर घर की देखभाल किया करती थीं।

एक दिन अपने पिता के लिये खाना ले जाने की उसकी सबसे बड़ी बेटी की बारी थी। जब तक वह उसके लिये खाना ले कर जंगल तक पहुॅची तब तक वह बहुत थक गयी थी सो वह घास के मैदान तक पहुॅचने से पहले ही सुस्ताने के लिये एक पत्थर पर बैठ गयी।

पर जैसे ही वह पत्थर पर बैठी तो उसको एक बहुत ज़ोर का झटका लगा और उसके नीचे से एक सॉप निकल आया। लड़की के हाथों से खाने की टोकरी छूट गयी और वह डर के मारे जितनी तेज़ वहॉ से भाग सकती थी उतनी तेज़ भाग गयी।

[32] The Snake – a folktale from Monferrato area, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956.
Translated by George Martin in 1980.

उस दिन उस किसान को खाना नहीं मिला और वह भूखा ही रह गया। शाम को जब वह घास के मैदान से घर लौटा तो उसने गुस्से में अपनी बेटी को बहुत डॉटा।

अगले दिन उसकी दूसरी बेटी की बारी थी। वह भी अपने पिता के लिये खाना ले कर चली। इत्तफाक से वह भी जंगल तक पहुँचते पहुँचते थक गयी और सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर जा कर बैठ गयी जिस पर उसकी बड़ी बहिन बैठी थी। उसके साथ भी वही हुआ जो उसकी बड़ी बहिन के साथ हुआ था।

जैसे ही वह उस पत्थर पर बैठी कि एक सॉप उसमें से बाहर निकला। वह भी उसको देख कर डर गयी और उसके हाथ से भी खाने की टोकरी नीचे गिर गयी और वह भी वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी भाग ली।

और उस दिन भी किसान को खाना न मिलने की वजह से भूखा रह जाना पड़ा। शाम को जब वह घर लौटा तो उसने अपनी इस बेटी को भी बहुत डॉटा।

उसके अगले दिन उसकी सबसे छोटी लड़की की बारी थी। वह सोच रही थी कि आज मेरी बारी है पर मैं सॉप से नहीं डरती। यह सोच कर उसने खाने की दो टोकरियॉ तैयार की – एक अपने पिता के लिये और दूसरी सॉप के लिये।

पर उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा उसकी दोनों बड़ी बहिनों के साथ हुआ था। वह भी जंगल तक जाते जाते थक गयी और जा

कर सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर बैठ गयी जहॉ उसकी दोनों बड़ी बहिनें बैठी थीं।

उसके बैठते ही उस पत्थर के नीचे से एक सॉप निकला तो वह डरी नहीं बल्कि अपने साथ लायी दो टोकरियों में से एक टोकरी का खाना उसने सॉप को दिया।

सॉप ने खाना खाया और बोला — "तुम मुझे अपने साथ घर ले चलो। मैं तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत ले कर आऊॅगा।"

यह सुन कर लड़की ने उस सॉप को उठा कर अपने ऐप्रन में रख लिया और अपने पिता के पास चल दी। वहॉ उसने अपने पिता को खाना खिलाया और फिर घर वापस आ गयी। घर आ कर उसने उस सॉप को अपने पलॅग के नीचे रख दिया।

वह वहॉ इतनी जल्दी जल्दी बढ़ता रहा कि जल्दी ही वह इतना बड़ा हो गया कि अब वह पलंग के नीचे रह ही नहीं सकता था। वह वहॉ से चला गया।

जाने से पहले वह उस लड़की को तीन वरदान देता गया। पहला वरदान तो यह कि जब भी वह रोयेगी तो उसके ऑसू मोती और चॉदी बन जायेंगे।

दूसरा वरदान यह कि जब भी वह हॅसेगी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरेंगे। और तीसरा वरदान यह कि जब वह अपने हाथ धोयेगी तो उसके हाथों से सब तरह की मछलियॉ निकलने लगेंगी।

एक दिन घर में खाने के लिये कुछ नहीं था। उसका पिता और बहिनें खाना न मिलने की वजह से बहुत कमजोर हो रहे थे सो उसने अपने हाथ धोये तो उसके हाथों में से खूब सारी मछलियॉ निकल आयीं।

यह देख कर उसकी बहिनों को उससे बहुत जलन होने लगी। उन्होंने अपने पिता को यह विश्वास दिला दिया कि उसके इस जादू के पीछे कुछ है इसलिये उस लड़की को सबसे ऊपर वाले कमरे[33] में बन्द कर देना चाहिये। पिता ने वैसा ही किया और उसको सबसे ऊपर वाले कमरे में बन्द कर दिया।

उनके घर के सामने राजा का घर था। राजा का एक बेटा था। एक दिन वह अपने घर के बागीचे में गेंद खेल रहा था। एक बार वह गेंद के पीछे भागा और फिसल कर गिर पड़ा। यह देख कर वह लड़की हॅस पड़ी। जैसे ही वह हॅसी उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरने लगे।

राजा का बेटा तो बेचारा सोच ही नहीं सका कि वे अनार के सोने के दाने आये कहॉ से क्योंकि उस लड़की ने तब तक अपनी खिड़की बन्द कर ली थी।

[33] Translated for the word “Attic” – in Western countries most houses have the conical roof because of snow. To make use of that small conical place they make a tiny room there. Sometimes these rooms are big too when the houses are big. See the picture of an attic above.

अगले दिन वह फिर बागीचे में खेलने आया तो उसने देखा कि जहॉ वे अनार के सोने के दाने गिरे थे वहॉ तो अनार का एक पेड़ उग आया है। वह पेड़ खूब ऊॅचा था और उस पर बहुत सारे अनार लगे हुए थे।

अनार देख कर वह बहुत खुश हो गया और उनको तोड़ने जा पहुॅचा पर वह पेड़ तो उसकी ऑखों के सामने सामने बढ़ कर और ऊॅचा हो गया। अब अगर उसको कोई अनार उस पेड़ पर से तोड़ना था तो जैसे ही वह उस अनार की तरफ हाथ बढ़ाता तो उस फल की डाली एक फुट और ऊॅची हो जाती।

इस तरह वह उस पेड़ पर से कोई भी अनार नहीं तोड़ पा रहा था। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ और अपने पिता से जा कर कहा।

राजा ने दूसरे लोगों को भी अनार तोड़ने के लिये भेजा पर उनमें से भी कोई आदमी उस पेड़ पर से एक पत्ती से ज्यादा नहीं तोड़ सका। इस पर राजा ने अपने यहॉ के सब अक्लमन्द लोगों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा कि इस जादू का क्या मतलब था।

उन अक्लमन्दों में जो उम्र में सबसे ज़्यादा बड़ा था वह बोला — "इस पेड़ के फल केवल एक लड़की ही तोड़ सकती है और फिर वही राजा के बेटे की पत्नी बन जायेगी।"

यह सुन कर राजा ने यह घोषणा करा दी कि उसके राज्य में जो कोई शादी लायक लड़कियॉ हैं चाहे वे किसी भी जाति की हों

और कहीं भी रहती हों अनार तोड़ने के लिये उसके घर आयें। और जो कोई भी उस पेड़ का अनार तोड़ पायेगी वही उसके बेटे की पत्नी बनेगी।

सो बहुत सारे देशों से हर जाति की लड़कियॉ राजा के घर अनार तोड़ने आयीं। सबने अनार तोड़ने के लिये कई तरह की छोटी बड़ी सीढ़ियॉ इस्तेमाल की पर वे सब छोटी पड़ गयीं। कोई भी सीढ़ी किसी भी अनार तक नहीं पहुँच सकी।

इन लड़कियों में उस किसान की दोनों बड़ी लड़कियॉ भी थीं जिसकी छोटी लड़की के मुँह से अनार के सोने के दाने गिर कर यह पेड़ उगा था । पर वे दोनों तो अनार तोड़ने के लिये उस सीढ़ी पर चढ़ते समय ही गिर गयीं।

जब आयी हुई लड़कियों में से कोई लड़की अनार नहीं तोड़ सकी तो राजा ने घरों में जा जा कर लड़कियों की खोज की और उस किसान के ऊपर वाले कमरे में बन्द लड़की को भी ढूँढ लिया।

जैसे ही लोग उस लड़की को ले कर उस पेड़ के पास आये तो उस पेड़ की शाखें अपने आप ही झुक गयीं और उसके अनार खुद बखुद उसके हाथों में आ गये।

यह देख कर सब लोग बहुत खुश हुए। यह देख कर राजा का बेटा बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "यही मेरी दुलहिन है पिता जी, यही मेरी दुलहिन है।"

बस फिर क्या था शादी की तैयारियॉ होने लगीं। लड़की की दोनों बहिनों को भी बुलाया गया था। तीनों एक ही गाड़ी में सवार हुईं पर जब वह गाड़ी एक जंगल में से गुजर रही थी तो उस गाड़ी को वहीं जंगल में ही रोक दिया गया और दोनों बड़ी लड़कियों ने सबसे छोटी वाली लड़की को गाड़ी से उतर जाने के लिये कहा।

जब वह उतर गयी तो उन बहिनों ने उसके दोनों हाथ काट डाले और उसकी ऑखें निकाल कर उसे अन्धा कर दिया। वह लड़की बेचारी वहीं बेहोश हो गयी। वे दोनों बहिनें उसको उसी बेहोशी की हालत में वहीं एक झाड़ी में छोड़ कर चली राजमहल चली गयीं।

सबसे बड़ी लड़की दुलहिन की पोशाक पहन कर शादी के लिये राजा के बेटे के पास गयी। राजा के बेटे की समझ में ही नहीं आया कि वह लड़की जिसने अनार तोड़ा था इतनी बदसूरत कैसे हो गयी। पर क्योंकि दोनों की सूरत काफी कुछ मिलती जुलती थी सो उसने सोचा कि शायद उसी से उसकी सुन्दरता के बारे में कुछ गलतफहमी हो गयी होगी।

उधर वह छोटी लड़की बिना ऑखों और हाथों के जंगल में पड़ी रो रही थी। एक गाड़ी चलाने वाला उधर से गुजर रहा था तो उसको उस लड़की को इस हालत में देख कर उस पर दया आ गयी। उसने उस लड़की को अपने साथ अपने खच्चर पर बिठा लिया और उसको अपने घर ले गया।

लड़की ने उस आदमी से नीचे देखने के लिये कहा तो उस आदमी ने नीचे देखा। उसने देखा कि वहाँ तो मोती और चाँदी पड़ी हुई है। ये वे मोती और चाँदी थे जो उस लड़की के रोते समय गिर गये थे। उस आदमी ने उनको उठा लिया और उनको बाजार में बेच आया।

उनको बेचने से उसको एक हजार क्राउन[34] से भी ज़्यादा मिले। इतना पैसा देख कर वह तो उस लडकी की सहायता करके बहुत खुश हो गया।

अब वह लड़की कोई काम तो कर नहीं सकती थी, न ही वह देख सकती थी और न ही वह उसके परिवार की ही कोई सहायता कर सकती थी क्योंकि उसके तो हाथ ही नहीं थे और आँखें भी नहीं थीं।

एक दिन उस लड़की को महसूस हुआ कि कोई साँप उसके पैरों के चारों तरफ लिपट गया है। यह वही साँप था जिसके साथ उसने पहले दोस्ती की थी। उसको खाना खिलाया था और जिसने उसे तीन वरदान भी दिये थे।

साँप ने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमको मालूम है कि तुम्हारी बहिन ने राजा के बेटे से शादी कर ली है और क्योंकि राजा मर गया है वह अब

[34] Currency in Europe at that time.

रानी बन गयी है। अब उसको बच्चा भी होने वाला है और वह अंजीर[35] खाना चाहती है।"

लड़की ने उस आदमी से कहा — "एक खच्चर पर अंजीर लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं अंजीर लाऊँगा कहाँ से? यह तो जाड़े का मौसम है और जाड़े के मौसम में तो अंजीर आती नहीं।"

लड़की बोली – "तुम बागीचे में जाओ तो।"

सो अगली सुबह जब वह बागीचे में गया तो वहाँ उसको एक बड़ा सा अंजीर का पेड़ दिखायी दे गया। उस पर बहुत सारी अंजीरें लगी हुई थीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस पर केवल अंजीरें हीं अंजीरें थीं पत्ती कोई नहीं थी। उस आदमी ने दो टोकरियाँ भर कर अंजीर तोड़ीं और अपने खच्चर पर लाद लीं।

उस आदमी ने उस लड़की से कहा — "इन बेमौसम की अंजीरों को राजा को दे कर तो मुझे बहुत सारी कीमत मिलेगी। इनकी तो मैं कोई भी कीमत माँग सकता हूँ। बोलो मैं क्या माँगू?"

लड़की बोली — "तुम उनसे आँखें माँग लेना।"

उस आदमी ने ऐसा ही किया परन्तु न तो राजा ने, न उसकी रानी ने और न रानी की बहिन ने, किसी ने भी उसको अपनी आँखें नहीं दीं।

[35] Translated for the word "Fig". See its picture above.

फिर उस लड़की की बहिनों ने आपस में बात की — "हम उसको अपनी बहिन की ऑखें दे देते हैं क्योंकि वे तो हमारे किसी काम की नहीं हैं।" सो उन्होंने अपनी बहिन की ऑखें दे कर उस आदमी से वे अंजीरें खरीद लीं।

ऑखें ले कर वह आदमी घर वापस आ गया और वे ऑखें ला कर उस लड़की को दे दीं। उन ऑखों को उसने अपने चेहरे पर फिर से लगा लिया और अब उसको फिर से पहले जैसा ही दिखायी देने लगा।

कुछ दिन बाद रानी की खूबानी[36] खाने की इच्छा हुई तो राजा ने फिर उसी आदमी को बुलवाया और कहा — "अगर तुमने अंजीर की तरह से कहीं से खूबानी का इन्तजाम नहीं किया तो.... ।

उस आदमी ने यह बात जब उस लड़की को बतायी तो उसने फिर वही कहा — "एक खच्चर पर खूबानी लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं खूबानी लाऊँगा कहॉ से? इस मौसम में मुझे खूबानी कहॉ मिलेगी?"

लड़की बोली – "तुम बागीचे में जाओ तो।"

[36] Translated for the word "Peach". See its picture above.

अगले दिन उसके बागीचे में खूबानी का एक पेड़ खड़ा हुआ था। अंजीर के पेड़ की तरह से खूबानी का पेड़ भी खूबानियों से भरा हुआ था पर उस पेड़ पर पत्ती एक भी नहीं थी।

उसने उस पेड़ से दो टोकरी भर कर खूबानियॉ तोड़ीं और दरबार में ले जाने लगा तो उसने फिर से उस लड़की से पूछा — "आज मैं राजा से इन खूबानियों के बदले में क्या मॉगू?"

लड़की बोली — "आज तुम उनसे हाथ मॉग लेना।"

उस दिन उसने उन खूबानियों की कीमत हाथ मॉगी पर कोई भी अपने हाथ काट कर उसे देने को तैयार नहीं हुआ – राजा को खुश करने को भी नहीं।

सो पिछली बार की तरह से मामला फिर से बहिनों के पास आया तो उन्होंने सोचा कि उनकी बहिन के हाथ तो उनके पास बेकार ही पड़े हैं तो क्यों न हम उन्हीं हाथों को इसको दे कर ये खूबानियॉ खरीद लेते हैं।"

सो उन्होंने अपनी बहिन के हाथ उस आदमी को दे कर खूबानियॉ खरीद लीं। उस आदमी ने वे हाथ ला कर उस लड़की को दे दिये। उस लड़की ने वे हाथ अपने हाथों की जगह लगा लिये और उसके हाथ अब पहले की तरह ही हो गये।

कुछ दिनों बाद रानी को फिर बच्चा हुआ तो वह तो एक बिच्छू था। फिर भी राजा ने एक शानदार नाच का इन्तजाम किया जिसमें सब लोगों को बुलावा भेजा गया।

बुलावा उस आदमी को भी आया जो रानी के लिये अंजीर और खूबानी ले कर गया था। वह लड़की रानी की तरह सजी और उस नाच में गयी। राजा उसको देखते ही उससे प्यार करने लगा। बाद में उसने महसूस किया कि वह तो उसकी असली रानी थी।

जब वह हॅसती थी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरते थे। जब वह रोती थी तो मोती और चॉदी गिरते थे। और जब वह हाथ धोती थी तो बरतन मछलियों से भर जाता था।

वे दोनों नीच बहिनें और बिच्छू आग में जला दिये गये। उसी दिन उस लड़की और राजा की शादी की दावत हुई और फिर वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

8 आधा नौजवान[37]

वरदानों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें देखने वाली बात यह है कि एक मछली के वरदान ने क्या क्या गुल खिलाये।

एक बार एक लड़की को बच्चे की आशा हुई तो उसकी पार्सले[38] खाने की इच्छा हुई। उसके घर के बराबर में एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी का पार्सले का एक बहुत बड़ा बागीचा था और उस बागीचे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था।

क्योंकि पार्सले वहाँ बहुत पैदा होता था सो उस बागीचे में कोई भी अन्दर आ सकता था और अपने आप पार्सले तोड़ कर ले जा सकता था।

सो वह लड़की भी उस जादूगरनी के बागीचे में पार्सले तोड़ने के लिये चली गयी। उसकी पार्सले खाने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह उस जादूगरनी के बागीचे का करीब करीब आधा पार्सले खा गयी।

---

[37] Cloven Youth – a folktale from Venice, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

[38] Parsley is a kind of herb, looks like green coriander leaves (cilanthro). It is most used in Italian dishes both as a fresh and dried herb. See its picture above.

जब वह जादूगरनी वापस आयी तो उसने देखा कि उसके बागीचे से तो आधा पार्सले गायब हो चुका था। उसने सोचा कि वह अगले दिन उस पर नजर रखेगी कि उसका इतना सारा पार्सले कौन ले गया।

वह लड़की वहाँ बचा हुआ पार्सले खाने के लिये अगले दिन भी गयी। उसने मुश्किल से उस बागीचे के पार्सले का आखिरी पौधा खाया होगा कि वह जादूगरनी वहाँ आ गयी और बोली — "आहा, तो वह तुम हो जो मेरे बागीचे का सारा पार्सले खा गयीं।"

वह लड़की बेचारी डर गयी और गिड़गिड़ाती हुई बोली — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो। मैं एक बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। मेरी पार्सले खाने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आ गयी।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है मैं तुमको जाने देती हूँ पर जो भी बच्चा तुमको होगा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सात साल का हो जायेगा तब वह आधा मेरा होगा और आधा तुम्हारा।"

यह सुन कर वह लड़की बहुत डर गयी सो वह जल्दी से उसको हाँ कर के वहाँ से चली आयी। समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बेटा अपने समय से बड़ा होने लगा।

जब उसका बेटा छह साल का हो गया तो एक दिन सड़क पर उसको वह जादूगरनी मिली। उस बच्चे को देख कर वह बोली — "अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

बच्चा घर आया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ आज मुझे अपनी पड़ोसन मिली थी। वह कह रही थी कि अपनी मॉ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

मॉ बोली — "अगर अबकी बार वह तुमको फिर मिले और फिर यह कहे कि "बस अब एक साल ही और बाकी है।" तो तुम कहना कि "तुम पागल हो"।"

जब उस बच्चे के सात साल के होने में तीन महीने बाकी रह गये तो एक दिन उस पड़ोसन ने फिर उस बच्चे से कहा — "अपनी मॉ से कहना कि बस अब केवल तीन महीने ही और बाकी रह गये हैं।"

बच्चे ने घर आ कर अपनी मॉ को अपनी पड़ोसन के शब्द जैसे के तैसे दोहरा दिये। उसकी मॉ ने फिर कहा कि "अगर अबकी बार वह तुमसे ऐसा वैसा कुछ कहे तो तुम उससे कहना कि "मैम तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या"।"

बच्चे ने मॉ के शब्द उस पड़ोसन को बोल दिये तो पड़ोसन बोली — "देखते हैं किसका दिमाग खराब होता है।"

तीन महीने बाद बुढ़िया जादूगरनी उस बच्चे को सड़क पर से उठा कर ले गयी और अपने घर ले जा कर उसे एक मेज पर पीठ के बल लिटा दिया। फिर एक बड़ा सा चाकू उठाया और सिर से ले कर पैर तक उसको दो बराबर हिस्सों में बॉट दिया।

एक हिस्से से उसने कहा — "तुम घर जाओ।" और दूसरे हिस्से से कहा — "तुम मेरे पास रहो।" सो एक हिस्सा अपनी मॉ के पास अपने घर चला गया और दूसरा हिस्सा उसके अपने पास रह गया।

एक हिस्सा जो घर चला गया था अपनी मॉ से जा कर बोला — "देखा मॉ? उस बुढ़िया ने मेरे साथ क्या किया और तुम कहती थी कि उसका दिमाग खराब हो गया है, वह पागल हो गयी है।"

उसकी मॉ ने गुस्से में आ कर अपने हाथ पैर फेंके पर अब वह कर ही क्या सकती थी उसका बेटा तो आधा हो ही चुका था। अब यह आधा लड़का और बड़ा होने लगा पर उसको यही पता नहीं था कि वह आगे चल कर अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा।

आखिर उसने मछियारा बनने का निश्चय किया। एक दिन जब वह ईल मछली[39] पकड़ रहा था तो उसने एक इतनी लम्बी ईल मछली पकड़ी जितना लम्बा वह खुद था।

जब उसने उसे बाहर खींचा तो वह ईल बोली — "अभी तुम मुझे जाने दो और फिर तुम मुझे दोबारा पकड़ना।"

यह सुन कर उस लड़के ने उस मछली को फिर से पानी में फेंक दिया। उस मछली के कहे अनुसार उसने अपना मछली पकड़ने

[39] Eel fish – a kind of fish like a snake. See its picture above

वाला जाल फिर से पानी में डाला और जब फिर से उसे खींचा तो अबकी बार उस जाल में बहुत सारी ईल मछलियॉ थीं।

वह अपनी ईल मछलियों से भरी नाव ले कर किनारे आ गया और उस दिन उसने उनको बेच कर बहुत सारा पैसा कमाया।

अगले दिन जब वह मछली पकड़ने गया तो उसके जाल में वही बड़ी ईल मछली फिर से आ गयी। अबकी बार उसने लड़के से कहा — "मुझे जाने दो और छोटी ईल की कसम खा कर जो कुछ भी तुम मॉगोगे तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।" सो उसने उस बड़ी ईल को फिर पानी में छोड़ दिया।

एक दिन जब वह मछली पकड़ने जा रहा था तो वह राजा के महल के पास से गुजरा। महल की खिड़की पर राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ बैठी हुई थी।

उसने रास्ते पर जाता एक ऐसा आदमी देखा जो सिर से पैर तक आधा था – आधा शरीर, आधा सिर, एक बॉह, एक टॉग। वह ऐसे अजीब आदमी को देख कर हॅस पड़ी।

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर लड़के ने ऊपर देखा और बोला — "तुम मेरे ऊपर हॅस रही हो? छोटी ईल के लिये, राजा की बेटी के मुझसे एक बच्चा होगा।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

कुछ समय बाद ही राजा की बेटी को बच्चे की आशा हुई तो राजकुमारी घबरायी।

उसके माता पिता को भी इस बात का पता चल गया तो उन्होंने अपनी बेटी से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बेटी बोली — "पिता जी, मैं भी आप ही की तरह से इस बात से बिल्कुल अनजान हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम।"

माता पिता बोले — "हमारी यह समझ में नहीं आया कि हमारी तरह तुम इस बात से अनजान कैसे हो? इसका पिता कौन है?"

राजा की बेटी रुऑसी हो कर बोली — "पिता जी, मुझे सचमुच ही कुछ पता नहीं है। मैं इसके बारे में वाकई कुछ भी नहीं जानती।"

उसके माता पिता उससे कई बार पूछते रहे और यह भी कहते रहे कि वह उनको सच सच बता दे। उसकी अगर कोई भी गलती होगी तो वे उसको माफ कर देंगे पर वह अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है और वह बेकुसूर है।

जब उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया तो उन्होंने उसको बुरा भला कहना शुरू किया और उसके साथ बुरा बरताव करना शुरू कर दिया।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बजाय खुश होने के उस लड़की के माता पिता खूब रोये क्योंकि उनके घर में एक बिना बाप का बेटा पैदा हुआ था।

इस बात की पहेली सुलझाने के लिये उन्होंने एक जादूगर को बुलवाया। जादूगर बोला — "एक साल तक इन्तजार करो जब तक यह एक साल का होता है तब शायद कुछ पता चले।"

एक साल के बाद जादूगर ने कहा — "तुमको इस बच्चे के जन्मदिन पर एक शानदार दावत देनी चाहिये और उसमें सारे कुलीन लोगों को बुलाना चाहिये।

जब वे सब यहाँ आ जायें तो एक सोने का और एक चाँदी का सेब इस बच्चे के हाथ में देना चाहिये। फिर यह बच्चा उन सेबों को ले कर सबके सामने जाये। यह बच्चा सोने का सेब अपने पिता को दे देगा और चाँदी का सेब अपने नाना को दे देगा।"

सो राजा ने अपने धेवते[40] के लिये दो सेब बनवाये एक सोने का और एक चाँदी का। और फिर उसके जन्म की खुशी में एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में बहुत सारे जाने माने लोगों को बुलाया गया। एक बड़े बन्द कमरे में दीवार के सहारे कुर्सियाँ लगवायी गयीं। जब लोग वहाँ आना शुरू हुए तो उनको उन कुर्सियों पर बिठाया गया।

जब सब लोग वहाँ आ गये तो बच्चे को उसकी आया के साथ वहाँ लाया गया और उसके हाथ में दो सेब, एक सोने का और एक चाँदी का, दे दिये गये।

[40] Grandson – daughter's son is called Dhevataa or Navaasaa

बच्चे की आया बच्चे और सेबों को ले कर उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगी। चारों तरफ घूम कर वह बच्चा राजा के दिये हुए सेबों के साथ वापस आ गया और उसने चॉदी का सेब ला कर राजा को दे दिया।

राजा बोला — "मैं इतना तो अच्छी तरह जानता हूॅ कि मैं तुम्हारा नाना हूॅ पर मैं जानना चाहता हूॅ कि तुम्हारा पिता कौन है।" बच्चे को उस कमरे में कई बार चक्कर लगवाया पर वह बिना किसी को सेब दिये हुए ही राजा के पास वापस आ गया।

वह जादूगर फिर से बुलवाया गया तो उसने कहा कि अबकी बार आप अपने शहर के सब गरीब आदमियों को बुलवाइये। सो राजा ने अबकी बार अपने राज्य के सारे गरीब लोगों के लिये एक दावत का इन्तजाम किया और उसमें उन सबको बुलवाया।

जब उस आधे नौजवान ने यह सुना कि राजा के महल में सब गरीबों के लिये एक दावत हो रही है तो वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ मेरी सबसे अच्छी वाली आधी कमीज, आधी पैन्ट, एक जूता, और मेरी आधी टोपी निकाल दो क्योंकि आज मैं राजा के महल में जा रहा हूॅ। आज उन्होंने मुझे वहॉ खाने का न्यौता दिया है।"

मॉ ने वैसा ही किया और वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के महल की तरफ चल दिया। कमरा खचाखच भरा था – मछियारे, भिखारी सब तरह के गरीब वहॉ जमा थे। वे सब बैन्चों

पर बैठे थे। राजा ने उनके लिये भी बैन्चें दीवार के सहारे सहारे ही लगवा रखी थीं।

जब सब लोग आ गये तो बच्चे की आया बच्चे को ले कर वहॉ आयी। राजा ने बच्चे के हाथ में सोने का सेब दे कर आया को उसको कमरे में चारों तरफ घुमाने के लिये कहा।

आया बच्चे को ले कर चल दी। घुमाते घुमाते वह उस बच्चे से कहती जाती थी — "बेटे, यह सेब अपने पिता को दे दो।"

जैसे ही वह बच्चा उस आधे आदमी के पास पहुँचा तो वह चिल्लाया — "पिता जी यह सेब लीजिये।"

सारे गरीब आदमी यह सुन कर ज़ोर से हॅस पड़े — "हा हा हा हा। ज़रा देखो तो राजा की बेटी पड़ी भी तो किसके प्रेम में पड़ी।"

केवल एक राजा ही था जो उस समय पूरे तरीके से शान्त था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो यही मेरी बेटी का पति होगा।" और उसने अपनी बेटी की शादी उस आधे नौजवान के साथ कर दी।

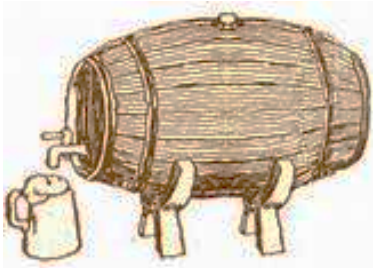

नये शादीशुदा पति पत्नी चर्च से निकले तो उन्होंने सोचा कि उनको वहॉ से ले जाने के लिये कोई बग्घी उनका इन्तजार कर रही होगी पर

वहॉ कोई बग्घी तो नहीं, हॉ एक बड़ा सा खाली बैरल[41] रखा था।

राजा ने उस बैरल में उस आधे नौजवान, उसकी पत्नी और उनके बच्चे को रख कर उस बैरल को बन्द कर दिया और उसे समुद्र में फेंक दिया।

समुद्र में उस समय तूफान आया हुआ था सो वह बैरल लहरों के ऊपर खूब ऊपर नीचे उछल रहा था। कुछ ही पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। राजा के महल के हर आदमी ने सोचा कि वह बैरल तो अब हमेशा के लिये समुद्र में चला गया।

पर वह बैरल डूबा नहीं था। वह बाहर की तरफ तैरने लगा। आधे नौजवान ने महसूस किया कि राजा की बेटी बहुत डरी हुई थी सो उसने उससे कहा — "प्रिये, क्या तुम चाहती हो कि मैं यह बैरल समुद्र के किनारे ले चलूँ?"

राजा की बेटी डर से सहमी सी बोली — "हॉ, अगर तुम इस को वहॉ ले जा सकते हो तो।" पर उसके कहने से पहले ही यह हो गया।

"छोटी ईल के लिये, ओ बैरल, समुद्र के किनारे चलो।" और वह बैरल समुद्र के किनारे आ कर लग गया। उस आधे नौजवान ने उस बैरल का तला तोड़ा और वे तीनों उसमें से बाहर निकल आये।

---

[41] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

यह खाना खाने का समय था सो वह आधा नौजवान बोला — "छोटी ईल के लिये, हमको खाना चाहिये।" बस तुरन्त ही एक मेज लग गयी जिस पर बहुत सारा खाना लगा था।

जब वे पेट भर कर खाना खा चुके तो उस आधे नौजवान ने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझसे खुश हो?"

राजा की बेटी बोली — "तुम मुझे तब और ज़्यादा अच्छे लगते जब तुम पूरे होते।"

इस पर उसने अपने आपसे कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या मैं पूरा और एक सुन्दर नौजवान बन सकता हूँ?" तुरन्त ही वह आधा नौजवान एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया और एक कुलीन आदमी की तरह दिखायी देने लगा।

उसने राजा की बेटी से फिर पूछा — "अब तो तुम खुश हो न?"

"मैं तब ज़्यादा खुश होती जब तुम एक बढ़िया महल में रह रहे होते। बजाय इसके कि हम समुद्र के इस उजाड़ किनारे पर खड़े हुए हैं।"

उस नौजवान ने फिर कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या हम एक बढ़िया महल में रह सकते हैं जिसमें दो सेब के पेड़ लगे हों। एक सेब के पेड़ पर सोने के सेब लगे हों और दूसरे पेड़ पर चॉदी के

सेब लगे हों। हमारे पास बहुत सारे दास दासियॉ हों, रसोइये हों और वह सब कुछ हो जो एक महल में होना चाहिये।"

तुरन्त ही वहॉ सब कुछ आ गया – महल, सेब के पेड़, रसोइये, दास, दासियॉ, आदि आदि।

कुछ दिन बाद उस आधे नौजवान ने जो अब आधा नहीं रह गया था बल्कि एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया था सब राजाओं और कुलीन लोगों को एक दावत का न्यौता भेजा। इसमें उसकी पत्नी के पिता भी शामिल थे।

जब सब लोग उसके घर आये तो उस नौजवान ने उन सबका अपने दरवाजे पर स्वागत किया और कहा — "मैं आप सबको चेतावनी देता हूॅ कि कोई भी इन सोने और चॉदी के सेबों को न छुए। अगर आप लोग इनको छुऐंगे भी तो फिर भगवान ही आप की रक्षा करे।"

वे सब बैठ गये और खाने पीने लगे। आधे नौजवान ने चुपके से कहा — "छोटी ईल के लिये, एक सोने का और एक चॉदी का सेब मेरे ससुर जी की जेब में चला जाये।"

ऐसा ही हुआ। एक सोने का और एक चॉदी का सेब उस नौजवान के ससुर की जेब में चला गया।

जब सबने खाना खा लिया तो वह अपने सब मेहमानों को अपने बागीचे में घुमाने के लिये ले गया तो वहॉ पाया कि उसके दो

सेब गायब हैं। उस नौजवान ने पूछा — "अरे मेरे दो सेब गायब हैं एक सोने का और एक चॉदी का। किसने लिये हैं मेरे सेब?"

सब बोले "मैंने नहीं लिये", "मैंने नहीं लिये"।

सबकी तलाशी ली गयी पर किसी के पास भी वे सेब नहीं निकले। आधा नौजवान बोला — "मैंने आप सबको पहले ही कहा था कि इन सेबों को छूना नहीं पर अब मैं सब राजाओं की तलाशी लेने के लिये मजबूर हूॅ।"

सो वह भीड़ में खड़े हर राजा रानी की तलाशी लेता चल दिया। आखीर में वह अपनी पत्नी के पिता के पास आया और उनकी दोनों जेबों में उसने दो सेब पाये।

वह बोला — "किसी और की तो सेबों को छूने की हिम्मत भी नहीं हुई और आपने दो सेब चुरा लिये? आपको मुझे इन दोनों सेबों का हिसाब देना पड़ेगा।"

राजा ने उसको समझाने की कोशिश करते हुए कहा — "पर मैं इन सेबों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने इनको नहीं चुराया। मैंने तो इनको छुआ भी नहीं। मैं कसम खाता हूॅ।"

आधा नौजवान बोला — "पर सारे सबूत तो आपके खिलाफ हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि आप बेकुसूर हैं?"

"हॉ मैं यह इसलिये कह रहा हूॅ क्योंकि मैं बेकुसूर हूॅ।"

"ठीक। जैसे आप बेकुसूर हैं वैसे ही आपकी बेटी भी तो बेकुसूर हो सकती थी। पर जो बरताव आपने उसके साथ किया

अगर वैसा ही बरताव मैं आपके साथ करूँ तो शायद इसमें कोई अन्याय नहीं होगा।"

उसी समय उसकी पत्नी भी आ गयी और बोली — "अब ऐसा कुछ मत कहना या करना कि मेरे पिता को मेरी वजह से कुछ सहना पड़े। वह अगर मेरे लिये बेरहम थे भी फिर भी वह मेरे पिता हैं और मैं तुमसे उनके ऊपर दया करने की भीख माँगती हूँ।"

आधे नौजवान ने दया कर के राजा को माफ कर दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था जिसको उसने मरा समझ लिया था और साथ में यह जान कर भी बहुत खुश था कि वह बेकुसूर थी।

राजा उन तीनों को फिर अपने घर ले गया। वहाँ वे सब खुशी खुशी रहने लगे। जब तक वे जिये तब तक सब आपस में हिल मिल कर रहे।

9 दो बहिनें[42]

वरदानों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि दो बहिनें थीं – एक बहिन मारकीज़[43] थी और दूसरी बहिन बहुत गरीब हालत में थी।

मारकीज़ के एक बदसूरत सी बेटी थी और उस गरीब बहिन के तीन बेटियॉ थीं। वे तीनों अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये सूत कातने का काम करती थीं।

एक दिन उनके पास मकान का किराया देने के लिये पैसे नहीं थे तो उनके मकान मालिक ने उनको घर से बाहर निकाल दिया और वे सड़क पर आ गयीं।

मारकीज़ का नौकर उधर से गुजर रहा था तो उसने मारकीज़ की बहिन और उसकी बेटियों को सड़क पर खड़ा देखा तो मारकीज़ को जा कर उनके बारे में बताया।

उसने मारकीज़ से उनको शरण देने की प्रार्थना की और वह तब तक उससे प्रार्थना करता रहा जब तक वह उनको अपने सामने वाले दरवाजे के ऊपर वाले कमरे में रखने के लिये तैयार नहीं हो गयी।

---

[42] The Two Cousins (Story No 183) – a folktale from Italy from its Province of Regusa area. Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 763 p.

[43] Marquise – the wife of a Marquis (Noble Man)

शाम को लड़कियॉ बैठीं और वे मारकीज़ की लालटेन की रोशनी में काम करने लगीं ताकि वे अपने लैम्प का तेल बचा सकें। पर यह मारकीज़ को अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि वे चीज़ें बरबाद कर रही हैं इसलिये उसने लालटेन बुझा दी। वे लड़कियॉ फिर चॉदनी में कातने लगीं।

एक शाम सबसे छोटी लड़की ने निश्चय किया कि वह तब तक जाग कर काम करेगी जब तक चॉद छिपेगा। सो जब चॉद उतरने लगा तो वह उसके पीछे पीछे चल दी।

इस तरह वह जब वह उसके साथ चलते और सूत कातते हुए उसके पीछे पीछे चली जा रही थी तो एक तूफान में फॅस गयी। वहीं पास में उसको एक मौनेस्टरी[44] दिखायी दी तो उस मौनेस्टरी में जा कर उसने शरण ली।

मौनेस्टरी मे उसको बारह साधु[45] मिले। उन्होंने उस लड़की से पूछा — "बेटी तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

वह बोली — "बाहर तूफान आया हुआ है सो मैं शरण लेने के लिये यहॉ आ गयी।"

उनमें से जो सबसे बड़ा साधु था वह बोला — "भगवान करे तुम और भी ज़्यादा प्यारी होती जाओ।"

---

[44] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

[45] Translated for the word "Monk"

दूसरा साधु बोला — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों में से हीरे और मोती झड़ें।"

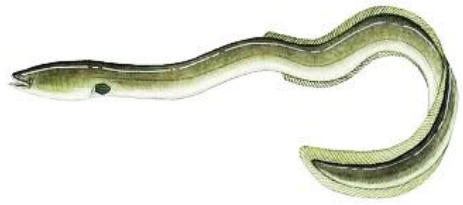

तीसरा साधु बोला — "जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से मछलियॉ और ईल मछली[46] गिरें।

चौथा साधु बोला — "जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुॅह से गुलाब और चमेली के फूलों की बारिश हो।"

पॉचवे साधु ने कहा — "तुम्हारे गाल दो सेबों की तरह से हो जायें।"

छठे साधु ने कहा — "जब तुम काम करो तो जैसे ही तुम उसे शुरू करो वह उसी समय खत्म हो जाये।"

तब तक तूफान थम चुका था सो उन्होंने उसको जाने का रास्ता दिखाया और कहा कि जब वह आधे रास्ते पहुॅच जाये तो पीछे मुड़ कर देखे।

इसके बाद वह लड़की वहॉ से चली गयी। उसने उन साधुओं के कहे अनुसार आधे रास्ते जा कर पीछे मुड़ कर देखा तो वह तो इतनी चमकीली हो गयी जैसे कि तारा।

जब वह घर पहुॅची तो उसने पहला काम तो यह किया कि उसने एक बरतन में पानी भरा और उसमें अपने हाथ डुबो दिये। तुरन्त ही उस बरतन में दो ताजा ईल मछली आ गयीं जैसे उनको

[46] Eel fish – a kind of fish. See its picture above

अभी अभी पकड़ कर लाया गया हो। उसकी मॉ और बहिनों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उन्होंने उससे कहा कि वह उनको सब बात बताये।

फिर उन्होंने उसके बालों में कंघी की तो उनमें से बहुत सारे हीरे और मोती निकल पड़े। उसकी मॉ और बहिनों ने उन सबको इकट्ठा कर लिया और वे उनको अपनी मारकीज़ मौसी के पास ले गयीं।

मारकीज़ ने तुरन्त ही उनसे उसका सारा हाल पूछा और अपनी बेटी को वहॉ भेजने का निश्चय किया क्योंकि उसकी लड़की को तो सुन्दरता की बहुत जरूरत थी।

उसने अपनी बेटी को छज्जे पर खड़े हो कर पूरी शाम इन्तजार करने के लिये कहा। और जब चॉद ढलने लगा तो उसने उसको भी सूत कातते हुए चॉद के पीछे पीछे भेजा।

उसको भी वह मौनेस्टरी मिल गयी और वहॉ वे **12** साधु मिल गये। उन साधुओं ने उस लड़की को तुरन्त पहचान लिया कि वह मारकीज़ की बेटी थी।

वहॉ बैठे सबसे बड़े साधु ने कहा — "भगवान करे तुम और ज़्यादा बदसूरत हो जाओ।"

दूसरे साधु ने कहा — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों से बहुत सारे सॉप निकलें।"

तीसरा साधु बोला — "जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से बहुत सारे हरे गिरगिट निकलें।"

चौथा साधु बोला — "जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकले।"

इसके बाद उन्होंने उसको वहाँ से भेज दिया। मारकीज़ तो अपनी बेटी के वापस आने का बहुत बेचैनी से इन्तजार कर रही थी पर जब उसकी बेटी घर वापस लौटी तो उसने देखा कि वह तो पहले से भी ज़्यादा बदसूरत हो गयी थी। यह देख कर उसकी माँ को तो इतना धक्का लगा कि वह तो बस मरते मरते बची।

उसने उससे पूछा कि उसके साथ क्या हुआ था तो जैसे ही उसने बोलने के लिये मुँह खोला तो उसके मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकलते देख कर तो वह बेहोश ही हो गयी।

इस बीच वह सुन्दर लड़की एक बार दरवाजे के पास बैठी थी कि एक राजा उधर से गुजरा। राजा ने उसको देखा तो उसको उस लड़की से प्रेम हो गया। उसने शादी के लिये उसका हाथ माँगा तो उसकी मारकीज़ मौसी ने हाँ कर दी।

वह लड़की अपनी मारकीज़ मौसी के साथ जो उसकी सबसे ज़्यादा करीब की रिश्तेदार थी उस राजा के साथ उसके देश चली गयी।

थोड़ी दूर जाने के बाद राजा आगे आगे चला गया ताकि वह अपने महल में अपनी पत्नी का ठीक से स्वागत कर सके। जैसे ही राजा ऑखों से ओझल हुआ तो मारकीज़ ने दुलहिन को पकड़ कर उसकी ऑखें निकाल लीं। उसको उसने एक गुफा में फेंक दिया और अपनी बेटी को राजा की गाड़ी में बैठा दिया।

जब राजा ने अपनी रानी की बदसूरत बहिन को गाड़ी से उतरते देखा तो वह डर गया। उसने धीरे से पूछा — "इसका क्या मतलब है?" लड़की ने इसका जवाब देने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि उसकी सॉस की बू से राजा वहीं बेहोश सा गिर पड़ा।

तब मारकीज़ ने राजा को एक कहानी बना कर सुनायी कि उस लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है। पर राजा को इस कहानी पर विश्वास नहीं हुआ और उसने उन दोनों मॉ बेटी को जेल में डलवा दिया।

उधर वह अन्धी लड़की उस गुफा में पड़ी पड़ी रोती रही और सहायता के लिये पुकारती रही। तभी वहॉ से एक बूढ़ा गुजर रहा था। उसने उसका रोना और चिल्लाना सुना तो उसके पास आया। उसको उस बुरी दशा में देख कर वह उसको उठा कर अपने घर ले गया।

अब उसका घर तो हीरे और मोतियों से, गुलाब और चमेली के फूलों से और ईल और मछलियों से भर गया। उसने उन सबसे दो

टोकरियॉ भर लीं और उनको ले कर राजा की खिड़की के नीचे खड़ा हो गया।

लड़की ने उससे कहा कि वह राजा को वे हीरे जवाहरात ऑखों के बदले में बेचे।

मारकीज़ ने उस बूढ़े को तुरन्त बुलाया और अपनी बहिन की लड़की की एक ऑख दे कर उन सब सुन्दर चीज़ों को खरीद लिया। उसने सोचा कि वह राजा से यह कहेगी कि यह सब उसकी बेटी ने पैदा किया है।

बूढ़ा वह एक ऑख ले कर वहॉ से चल दिया और वह एक ऑख ला कर उस लड़की को दे दी। उस लड़की ने अपनी वह ऑख अपनी ऑख की जगह लगा ली। अगले दिन वह फिर वैसी ही टोकरियॉ ले कर महल गया और उनको भी ऑख के बदले में बेचने के लिये कहा।

मारकीज़ जो राजा को इस बात का विश्वास दिलाने के लिये बहुत उत्सुक थी कि वह हीरे मोती फूल मछलियॉ आदि सब उसकी बेटी ने पैदा किये थे सो उसने उस बूढ़े से वे दोनों टोकरियॉ भी अपनी बहिन की बेटी की दूसरी ऑख दे कर खरीद लीं।

पर राजा को इस बात का विश्वास नहीं दिलाया जा सका कि वह सब उस लड़की ने ही पैदा किया है क्योंकि वह जब भी उस लड़की के पास जाता तो उसकी सॉसों से अभी भी वैसी ही बू आती जैसी कि पहली बार आयी थी।

अब उस गरीब बहिन की लड़की को तो अपनी ऑखें मिल गयीं थीं सो एक दिन उसने एक कपड़े पर कढ़ाई कर के अपनी तस्वीर बनायी और उस तस्वीर को बूढ़े को दे कर बेचने के लिये उसी सड़क पर रखवा दिया जिस पर राजा का महल था।

राजा उधर से निकला तो उसने वह तस्वीर देखी तो उसने बूढ़े से पूछा — "यह तस्वीर किसने बनायी है?"

बूढ़े ने उसको सारी कहानी सुना दी। तो राजा बोला कि वह उस लड़की से मिलना चाहता है। बूढ़ा राजा को अपने घर ले गया। राजा ने उस लड़की को पहचान लिया और वह उसको अपने महल ले आया।

मारकीज़ को उसने गरम तेल में डाल कर उबाल कर मार दिया और अपनी रानी के साथ खुशी से रहने लगा। बाद में उसने अपनी रानी के परिवार को भी अपने महल में बुलवा लिया।

10 कृतज्ञ सॉप[47]

वरदान की यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के सूडान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था। रास्ते में उसको दो सॉप लड़ते हुए मिले। वह उनके पास गया तो उसने देखा कि उनमें से एक सॉप की लड़ते लड़ते बहुत ही बुरी हालत हो गयी थी।

उस आदमी को उस घायल सॉप पर बहुत दया आयी सो उसने एक डंडी उठायी और उन दोनों लड़ते हुए सॉपों को अलग अलग कर दिया।

उसने बड़े वाले सॉप को धमकी दी तो वह वहॉ से बड़ी तेज़ी से भाग गया। फिर उसने दूसरे सॉप को डंडी से छू कर देखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था कि नहीं। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह अभी भी ज़िन्दा था।

सॉप बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद आदमी। अगर तुम यहॉ न आते तो अब तक तो मैं मर ही गया होता। तुम्हारे इस उपकार के बदले मैं तुमको एक ताकत देता हूॅ कि तुम सारे जानवरों की भाषा समझ सको कि वे क्या कह रहे हैं।"

आदमी ने पूछा — "क्या तुम सच कह रहे हो?"

---

[47] The Grateful Serpent – a folktale from Nuer Tribe, Sudan, Eastern Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998. Read this book in HIndi translated by Sushma Gupta.

"हॉ बिल्कुल। तुम वह सब जान जाओगे जो मच्छर चूहा और गाय आदि जानवर बात करेंगे। पर ध्यान रखना कि यह बात तुम किसी से कहना नहीं नहीं तो तुम मर जाओगे।"

यह भेंट पा कर वह आदमी बहुत खुश हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्यार से विदा कहा और अपने अपने रास्ते चले गये।

उस शाम सोने से पहले उस आदमी ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर लिये और सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया।

कुछ देर बाद एक मच्छर दरवाजे से अन्दर आने की कोशिश करने लगा। जब वहॉ से उसको अन्दर आने का रास्ता नहीं मिला तो वह खिड़की पर गया। पर वहॉ भी उसको अन्दर आने की कोई जगह नहीं मिली तो गुस्से में आ कर वह बहुत ज़ोर से भिनभिनाने लगा।

"सत्यानाश हो इस जगह का। यह घर तो ताबूत की तरह से कस कर बन्द है। अब मैं इसके अन्दर कैसे घुसूँ?"

घर के अन्दर आदमी ने जब मच्छर की यह बात सुनी तो उसको हॅसी आ गयी। उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा — "अरे तुम क्यों हॅस रहे हो?"

अपनी दूसरी हॅसी को रोकते हुए आदमी बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं।" और फिर वे सो गये।

कुछ देर बाद एक चूहे ने उसके घर में घुसने की कोशिश की। उसने भी घर का दरवाजा ओर खिड़कियॉ देखीं पर उसको भी वे घुसने के लिये नामुमकिन लगीं।

चूहे ने थोड़ी देर तो सोचा फिर वह सीधा छत की तरफ भाग गया। वहॉ उसको तख्तों के बीच में घर में घुसने की एक छोटी सी जगह मिल गयी सो वह वहॉ से घर में घुस गया।

उसने चीज़[48] के लिये उस आदमी के घर के सारे कमरे छान मारे। उसके लिये उसने इधर चीज़ें गिरायीं उधर चीज़ें गिरायीं पर उसको चीज़ कहीं नहीं मिली।

यह देख कर वह गुस्से में चिल्लाया — "हॅुह। सत्यानाश हो इस घर का। यह किस तरह का घर है कि मुझे यहॉ चीज़ का एक ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा।"

बिस्तर में लेटे लेटे उस आदमी ने भी यह सुना तो वह फिर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा। उसको हॅसता सुन कर उसकी पत्नी ने फिर पूछा — "अब क्या हुआ? अब क्यों हॅस रहे हो?"

आदमी ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोकते हुए कहा — "ओह कुछ नहीं, कुछ नहीं। सचमुच में कुछ नहीं।"

[48] Cheese is the prcessed Indian Paneer. It is very commom ingredient of most European and American dishes

रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जैसे वह रोज़ करता था उसी तरह उस सुबह को भी वह गायों के बाड़े में गया और उनको हरे हरे घास के मैदान में चराने के लिये ले गया।

रास्ते में सब गायें आपस में बात करती जा रही थीं और वह आदमी बड़ी रुचि से उनकी बातें सुनता हुआ चला जा रहा था। उसके बाद उनके दूध दुहने का समय आया तो उसकी पत्नी बैठने के लिये एक स्टूल और दूध दुहने के लिये एक बालटी ले आयी।

उसको देख कर सबसे बड़ी गाय रँभायी और बोली — "ओ गायों देखो ज़रा, यह स्त्री हमारा दूध चुराने आ गयी।" यह सुन कर वह आदमी फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

इस बार उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया — "तुम फिर हँस रहे हो? क्या बात है कल से तुम हँसे ही जा रहे हो।"

"नहीं नहीं कोई खास बात नहीं, बस ज़रा यूँ ही।" पर उसके पास ऐसा कोई बहाना नहीं था जिस पर कोई दूसरा उस पर विश्वास कर लेता।

उसी समय गाय ने फिर से रँभाना शुरू कर दिया — "नहीं नहीं, आज नहीं। आज मैं अपना दूध अपने बछड़े के लिये रखना चाहती हूँ।" और वह उसकी पत्नी से दूर हट गयी। आदमी ने उसकी बात फिर से समझ ली तो वह फिर हँस पड़ा।

इस बार पत्नी से रहा नहीं गया तो वह बोली — "तुम क्या सोचते हो कि तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?"

उसने फिर से उसको यह कर शान्त किया — "ओह मेरी प्यारी पत्नी, किसी का नहीं, किसी का नहीं। तुम तो यूँ ही बस...।"

वह बोली — "तुम एक बेवकूफ की तरह से बरताव कर रहे हो।" और अपना स्टूल और बालटी ले कर घर के अन्दर चली गयी।

शाम को वह स्त्री फिर से गायों को दुहने के लिये आयी तो वह बहुत थोड़ा दूध ही दुह पायी सो वह अपने पति से बोली — "देखना ये गायें मुझे दूध ही नहीं दुहने दे रहीं।"

गाय बोली — "क्या तुम यह दूध मेरे बछड़े को दूध पिलाने के लिये ले जा रही हो?" यह सुन कर तो आदमी हँसते हँसते दोहरा ही हो गया।

पत्नी बोली — "यह क्या कोई हँसने की बात है जो तुम इतनी ज़ोर से हँस रहे हो? तुम मेरा मजाक बना रहे हो। तुम मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं करते।"

एक बार फिर गाय रँभायी — "हो सकता है कि उसके पास इसकी कोई वजह हो।"

पति फिर हँस पड़ा। उससे अपनी हँसी रोकी ही नहीं गयी।

पत्नी बोली — "अगर तुम्हारा यही ढंग रहेगा तो मैं गाँव के अक्लमन्द लोगों के पास जाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे रात को हमारे घर आयें। मैं उनको अपनी समस्या बताऊँगी और उनसे तलाक की प्रार्थना करूँगी।

अब पति के पास कुछ कहने को नहीं था। वह फिर से बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा कि शायद हॅस कर वह अपनी पत्नी को शान्त कर सके पर ऐसा नहीं हुआ। वह शान्त नहीं हुई।

शाम को गॉव के बड़े लोग आये और आग के चारों तरफ बैठ कर उस स्त्री से बोले — "तुमने हमें यहॉ क्यों बुलाया है?"

"मेरा पति मेरे ऊपर बिना किसी वजह के हॅसता रहता है। हम सोने जाते हैं तभी भी यह हॅसता है। जब यह जानवर चराने ले जाता है तभी भी हॅसता है जब मैं दूध दुहती हूॅ यह तभी भी हॅसता है। मुझे अच्छा नहीं लगता कि इस तरह से कोई मेरा मजाक बनाये।"

बड़े लोगों ने एक दूसरे की तरफ देखा और हॉ में सिर हिलाया कि हॉ यह स्त्री कह तो ठीक रही है। उन्होंने उसके पति से पूछा — "क्यों भाई क्या बात है? हमें बताओ कि तुम अपनी पत्नी पर हर समय क्यों हॅसते रहते हो?"

पति बोला — "नहीं मैं उस पर नहीं हॅसता।"

"तो फिर तुम किस पर हॅसते हो?"

"मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है।"

"तुम हमारा बेवकूफ नहीं बना सकते। और इसमें न बताने की इजाज़त की क्या बात है। बताओ तुम किस पर हॅसते हो।"

"अगर मैं थोड़े में कहूॅ तो मैं वह सब समझता हूॅ जो कुछ भी ये जानवर आपस में बात करते हैं।"

इस पर उन बड़े आदमियों ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और ना में सिर हिलाया। मामला बिल्कुल साफ था कि यह आदमी पागल हो गया था। इसके बाद वे सब वहॉ से एक दूसरे कमरे में चले गये और एक नतीजे पर पहुँचे।

उसके बाद वे सब वापस लौटे और बोले — "ओ स्त्री, आज से तुम आजाद हो। तुमको आज से इस आदमी से तलाक दिया जाता है क्योंकि तुम्हारा पति पागल हो गया है।"

पत्नी ने यह सुन कर रोना शुरू कर दिया तो पति ने उसे फिर से समझाना शुरू किया कि यह सब क्या था। पर बड़े लोगों का फैसला किसी तरह से नहीं टाला जा सका। और अब उनका दिमाग भी बदला नहीं जा सकता था।

इस तरह से यह शादी खत्म हो गयी। गॉव के लोगों ने उस दुखी जोड़े से सहानुभूति प्रगट की और पति अपनी पत्नी से बचने के लिये वह गॉव छोड़ कर एक अकेली जगह चला गया।

वह वहॉ कुछ दिन रहता रहा कि उसको वही सॉप फिर से मिल गया जिसको उसने बचाया था।

सॉप बोला — "हलो आदमी, तुमसे फिर से मिल कर बहुत खुशी हुई। पर तुम यहॉ इस जगह क्या कर रहे हो?"

आदमी बोला — "काश तुम जानते कि मेरे साथ क्या हुआ है। मुझे तुम्हारी दी हुई भेंट अपने गॉव वालों को बतानी पड़ी और उन सब ने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी, मुझे अपना गॉव भी छोड़ना पड़ा। इस बात को कोई नहीं मान सकता कि तुम मेरे लिये खुशकिस्मती ले कर आये।"

सॉप बोला — "तुम आदमी लोग भी कितने बेवकूफ होते हो। तुम लोग यह तो देखते नहीं कि क्या सच है। तुम लोगों को तो बस जो कुछ ऊपर से दिखायी देता है तुम लोग उसी को सच समझ लेते हो।

सुनो। जो लोग तुमको पागल कह रहे है वे खुद ही सबसे बड़े पागल हैं। उनके बारे में सोचना छोड़ो। तुम एक ऐसी पत्नी से बच गये जो तुमको समझ ही नहीं सकी। अच्छा हुआ कि तुम अपने बेवकूफ साथियों से भी बच गये।

तुमसे ज़्यादा किस्मत वाला और कौन होगा। खुश रहो और देवता तुम्हारी रक्षा करें।"

आदमी ने सोचा "यह तो ठीक है। यह सॉप ठीक कह रहा है। अब मैं एक आजाद और खुशकिस्मत आदमी हूॅ।" और खुशी से सीटी बजाते हुए वह आजाद चिड़ियों की बातचीत सुनने के लिये एक मक्का के खेत की तरफ चल दिया।

11 जानवरों की भाषा–1[49]

वरदान मिलने की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत समय पहले की बात है कि एक बार एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। वे दोनों इतने गरीब थे कि न तो उनके पास खाने के लिये काफी था न पहनने के लिये।

वे केवल गरीब ही नहीं थे बल्कि वे बेचारे किस्मत के भी मारे थे। वे इतने ज़्यादा बदकिस्मत थे कि वे कितनी भी कोशिश करें उनका कोई भी काम ठीक नहीं होता था।

अगर वे कभी कोई बकरी या कोई जानवर या सूअर अपने खाने या पैसे कमाने के लिये खरीदते तो वह मर जाता। और अगर वे खेती करते तो या तो उनकी खेती नष्ट हो जाती या फिर जानवर आ कर उसको खोद कर खा जाते।

एक दिन जब वे अपने टूटे फूटे घर में बैठे हुए थे जिसमें बारिश के मौसम में पानी टपकता रहता था और जब सूरज निकलता था तो धूप आती रहती थी तो पति अपनी पत्नी से बोला — "शायद मेरे पास मेरी गरीबी का जवाब है।"

---

[49] Animal Language-1 – a folktale from Ghana, West Africa, Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories". Read this book in Hindi Translated by Sushma Gupta. Read a similar story at my Web Site
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/51-bull-ass.htm

उसकी पत्नी बोली — "कोफ़ी[50], मुझे चिढ़ाओ मत। कोई भी हमें हमारी इस गरीबी से बाहर नहीं निकाल सकता। हम लोगों ने सब कुछ तो कर के देख लिया। हमें किसी से भी कुछ नहीं मिलता। अब तो मैंने इस बारे में सोचना भी छोड़ दिया है।"

पति बोला — "हमें इस तरह से हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठना चाहिये अरबा[51]। तुम्हीं ने तो मुझसे कहा था कि उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये और अब तुम ही ऐसी बात कर रही हो?"

पत्नी बोली — "ठीक है ठीक है। तो अब बताओ तुम्हारे पास इस गरीबी का क्या जवाब है?"

पति बोला — "मैं सोचता हूँ, हालाँकि मुझे पता नहीं कि यह मेरा सोचना कुछ काम करेगा या नहीं पर फिर भी।

मैं सोच रहा हूँ कि मैं सरदार कूमा[52] के पास जाऊँ और उससे उन पाम[53] के पेड़ों में से उनका रस निकालने का काम माँग लूँ जिनसे उसके यहाँ शराब निकलती है। और तुम मेरी पत्नी उस शराब को बेचने के लिये बाजार ले जाओ।"

अरबा बोली — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर क्या वह तुमको यह काम देगा?"

---

[50] Kofi – a very common name of a Ghanaian man

[51] Araba – a name of a Ghanaian woman

[52] Chief Kumah

[53] Palm trees – its sap is used to make palm wine which is known as Taadee in India.

पति बोला — "पता नहीं वह देगा भी या नहीं पर इसको भी मालूम करने का एक ही तरीका है कि वहॉ जाया जाये और कोशिश की जाये। और इसमें मेरा कुछ जाता भी नहीं है।

इसके अलावा उसके खेत में तो इतने सारे पाम के पेड़ हैं कि मुझे नहीं लगता कि वह मुझे थोड़े से पाम के पेड़ का रस भी नहीं निकालने देगा।

लोगों का कहना है कि वह बड़ा अमीर और दयालु है और इसी लिये लोग उसको "पैसों का सरदार"[54] कहते हैं।"

इस बीच अरबा अपनी मुर्गियों के उन अंडों को गिन रही थी जिनमें से बच्चे निकलने वाले थे। उसने अपनी ऑखें बन्द की और सोचने लगी कि वह उस शराब से मिले पैसे को कैसे खर्च करेगी।

वह नये कपड़े खरीदेगी और अपने घर की टपकती हुई छत ठीक करायेगी। उसने सोचा कि कल मिसेज नैटी[55] जो पोशाक पहने हुई थी वह नीले रंग में बहुत अच्छी लगेगी। हॉ, नीला रंग। यही रंग तो उसको चाहिये।

अगले दिन बहुत सुबह ही कोफ़ी अपने उस पैसों वाले सरदार के पास उसके कुछ पाम के पेड़ मॉगने चल दिया।

जब वह वहॉ पहुॅचा तो सरदार बोला — "मेरे बेटे, यह तो बताओ कि मेरे लिये उसमें क्या है? मैं तो एक व्यापारी हूॅ और मैंने

[54] Money Chief
[55] Mrs Natie

इतना सारा पैसा केवल अपना पैसा दे कर ही नहीं कमाया है। तो इसमें तुम मुझे यह बताओ कि मेरा हिस्सा कितना है।

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं कि कोई मुर्गी अपने पड़ोसी के खाने पर नहीं जीती सो हमको आपस में एक व्यापार करना चाहिये। मैं तुम्हारे हाथ धोता हूँ और तुम मेरे हाथ धोओ।"

कोफ़ी बोला — "मै जानता हूँ कि आप एक न्याय प्रिय आदमी हैं इसलिये जो भी आप कहेंगे मुझे मंजूर है।"

सरदार कूमा बोला — "तो ऐसा करो कि तुम मेरे दस पाम के पेड़ ले लो और उनका रस निकाल लो। फिर जितना भी पैसा तुम उसकी शराब बेच कर बनाओगे उसको हम लोग बराबर बराबर बॉट लेंगे।

मैं बल्कि तुमको रस इकट्ठा करने के लिये कैलेबाश[56] भी दूँगा जिनमें तुम शराब भर सकते हो। सो अब इन कैलेबाश में से जो कैलेबाश भी तुम्हें चाहिये तुम ले लो।"

इतना कह कर उसने अपने पास रखे सब कैलेबाश उसको दिखा दिये।

कोफ़ी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उससे जितने भी कैलेबाश उठाये जा सकते थे उसने उठा लिये और अपने घर आ गया।

[56] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa. See its picture above.

घर आ कर उसने अपनी पत्नी को सरदार से हुई इस बात के बारे में बताया तो वह भी बहुत खुश हुई। उसको लगा कि वह जो कुछ भी सोच रही थी वह बस अब सब सच होने वाला है।

अगले दिन कोफ़ी गॉव के हर आदमी से पहले उठ गया। वह अपने नये काम पर जाने के लिये बहुत बेचैन था। वहॉ जा कर उसने पाम के पेड़ गिराये और उनमें से उनका रस निकाला।

वह सारा दिन बहुत मेहनत से काम करता रहा। यहॉ तक कि शाम को भी देर तक वह अपने काम में लगा रहा जब तक कि उसके पेट में खाने के लिये चूहे नहीं कूदने लगे।

उसने सोचा, "एक बार शराब निकल आये और बिक जाये फिर मैं जितना खाना खाना चाहूँगा उतना खाऊँगा पर अभी तो मुझे काम करना चाहिये।"

सो उस रात कोफ़ी और उसकी पत्नी बहुत देर तक बात करते रहे। उन्होंने इतनी बातें की जितनी शायद उन्होंने पहले कभी नहीं की थीं। वे अचानक बहुत खुश थे और सुबह होने की राह देख रहे थे। उन्होंने खेल खेले और अगले दिन की तैयारी की कि वह कितने कैलेबाश भर कर शराब निकालेंगे। अगले दिन सुबह बहुत जल्दी ही कोफ़ी शराब इकट्ठी करने के लिये जंगल चल दिया।

जैसे ही वह अपने पहले पेड़ के पास पहुँचा वह चिल्लाया — "ओह नहीं।" उसने देखा कि उसका तो वहॉ कैलेबाश ही टूटा पड़ा था।

उसने पूछा — "किसने किया यह?"

पर उसको यकीन था कि दूसरे कैलेबाशों के साथ ऐसा नहीं हुआ होगा। ऐसा सोच कर उसने इस पहले पेड़ से निकाली शराब का ज़्यादा दुख नहीं मनाया।

फिर इस उम्मीद में कि दूसरे कैलेबाश तो ठीक ही होंगे वह दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ा पर उसकी बदकिस्मती से वह कैलेबाश भी टूटा हुआ था।

इस तरह एक एक कर के वह हर पाम के पेड़ के पास गया पर उसको हर कैलेबाश टूटा मिला और उसकी सब शराब जा चुकी थी। अब वहाँ जो कुछ भी बचा था वह थे टूटे हुए कैलेबाश के टुकड़े और उस बिखरी हुई शराब के ऊपर मँडराते हुए मक्खियों और मधुमक्खियों के झुंड।

यह सब देख कर कोफ़ी बहुत परेशान सा अपनी पत्नी के पास अपने घर दौड़ा गया। उसकी पत्नी ने उसको इतना परेशान देख कर पूछा — "क्या हुआ कोफ़ी?"

कोफ़ी बोला — "अरबा, हमारे ऊपर एक बार बिजली फिर गिर पड़ी है। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि मैं जो कुछ भी करने की कोशिश करता हूँ वह सब बेकार हो जाता है। जब मैं वहाँ शराब इकट्ठी करने गया तो वहाँ सारे कैलेबाश टूटे पड़े थे और कोई शराब नहीं थी।"

अरबा ने आश्चर्य और दुख से कहा — "ऐसी बात न करो कोफ़ी। तुम तो बहुत मेहनती हो और हमारे भगवान को हमारे ऊपर कभी तो दया करनी पड़ेगी। तुमको अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।

मुझे यकीन है कि वहॉ उन पेड़ों में शराब थी तो जरूर पर मुझे यह लगता है कि कोई उसको चुरा कर ले गया है और अपनी चाल को छिपाने के लिये वे बरतन तोड़ गया है।"

कोफ़ी धीरे से बोला — "तुम ठीक कहती हो शायद। मुझे ऐसे ही हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ जाना चाहिये और अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।"

अरबा मुस्कुरा कर बोली — "छोड़ देने की बात छोड़ो।"

कोफ़ी ने जब अरबा की मुस्कुराहट देखी तो अरबा फिर बोली — "यही तो वह आदमी है जिससे मैंने शादी की थी।"

इस तरह अपनी पत्नी के उत्साह भरे शब्द सुन कर कोफ़ी फिर से सरदार कूमा के पास और कैलेबाश उधार मॉगने गया। उसने पाम के पेड़ों में से रस निकालने के लिये फिर से उनको काटा और उनके नीचे रस को इकट्ठा करने के लिये उनमें कैलेबाश बॉधा और घर आ गया।

पर अगली सुबह जब वह फिर से रस इकट्ठा करने के लिये उन पेड़ों के पास गया तो वे सारे कैलेबाश फिर से टूटे पड़े थे और फिर से मक्खियॉ और मधुमक्खियॉ उनके रस के ऊपर लड़ रहीं थीं।

इस बार कोफ़ी को विश्वास हो गया कि यह काम किसी चोर का ही था उसकी बदकिस्मती का नहीं।

सो कोफ़ी सरदार कूमा के पास फिर से कुछ और कैलेबाश उधार मॉगने के लिये गया। इस बार उसने शराब इकट्ठा करने के लिये उनको लगा कर यह देखने के लिये वहीं बैठने का फैसला किया कि वह यह देखे कि उसके साथ ऐसा कौन करता है।

कैलेबाश लगा कर वह एक ऐसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ से वह अपने पेड़ों को ठीक से देख सकता था।

वह बड़े धीरज से इन्तजार करता रहा। पर इन्तजार करते करते वह थक गया सो वह सोने ही वाला था कि मच्छरों के झुंड की भिनभिनाहट ने उसको जगा दिया।

अब बजाय इसके कि वह उनको अपनी ठोड़ी और कान पर हाथ मार कर मारता उसने उनको अपना हाथ हिला कर ही हटा दिया। उसको लगा कि अगर उसने मच्छरों को मारा तो शायद चोर को पता चल जाये कि वह वहॉ छिपा हुआ है।

फिर कई घंटों तक कोफ़ी फिर से इन्तजार करता रहा पर वे मच्छर उसको बहुत तंग कर रहे थे। तभी उसने अपने कुछ ही गज पीछे एक डंडी के टूटने की आवाज सुनी।

एक पल के लिये उसको यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि वह वहॉ उस गहरे जंगल में था ही क्यों। क्या वे बरतन उसकी ज़िन्दगी

से ज़्यादा कीमती थे? अगर वह चोर कोई जंगली जानवर हो जिससे वह नहीं लड़ सकता हो तो? या फिर... ?

तभी उसको एक बरतन के टूटने की आवाज सुनायी दी। उसने चॉद की बहुत ही धुँधली रोशनी में देखने की कोशिश की तो उसको लगा कि एक हिरन उसके एक कैलेबाश के पास खड़ा था।

वह उस हिरन की तरफ देख ही रहा था कि उस हिरन ने एक पेड़ के नीचे से कोफ़ी का एक बरतन खींच लिया और उस बरतन का सारा रस अपने बरतन में पलट लिया और कोफ़ी का बरतन तोड़ कर जमीन पर फेंक दिया।

कोफ़ी उस हिरन के पीछे उसके सींगों को निशाना बनाते हुए भागा। हालॉकि हिरन तुरन्त ही कूद कर वहॉ से भाग लिया पर कोफ़ी उसका पीछा करता ही रहा। उसने सोच रखा था कि आज वह इस हिरन को अपने हाथ से जाने नहीं देगा।

यह दौड़ सुबह तब तक चलती रही जब तक सूरज निकला और इस तरह वे एक ऊॅची पहाड़ी पर जा पहुॅचे।

कि तभी पहाड़ी से नीचे उतरते समय कोफ़ी को जानवरों का एक झुंड अपनी मीटिंग करता मिल गया। उस मीटिंग के बीच में एक शेर बैठा था और कोफ़ी को लगा कि वह उनका राजा था।

भागते भागते कोफ़ी रुक गया। वह बोला — "अब मुझे पता चल गया कि यह जंगली जानवरों का काम है।"

वह हिरन भागते भागते जानवरों के उस झुंड में घुस गया और जा कर शेर के सामने अपने दोनों आगे वाले पैर फैला कर और अपना सिर उनके बीच में रख कर बैठ गया जैसे वह उसको सिर झुका कर प्रणाम कर रहा हो।

शेर बोला — "क्या बात है हिरन? क्या यह तुम्हारे लिये काफी नहीं था कि हमने तुम्हारे ऊपर खुले जंगल में ध्यान देना बन्द कर दिया था? और अब तुमने हमारे घरों में भी हमारा पीछा करना शुरू कर दिया?"

इससे पहले कि शेर अपनी बात खत्म करता हिरन ने हॉफते हुए अपनी कहानी सुना दी। बन्दर जो शेर का सहायक लगता था उसने कोफ़ी से शेर को यह बताने के लिये कहा कि वह शेर को यह बताये कि वह उनके दोस्त का पीछा क्यों कर रहा था।

कोफ़ी ने उनको अपनी कहानी बताने में ज़रा सा भी समय बरबाद नहीं किया।

उसने उनको बताया कि किस तरह उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी और किस तरह फिर उसने यह सोचा कि ये पाम के पेड़ उसको अमीर बना देंगे। और फिर किस तरह उसको यह पता लगा कि वह हिरन उसकी शराब चुरा रहा था।

फिर उसने शेर से उसकी मीटिंग मे दखल देने के लिये माफी मॉगी और अपने घर अपनी पत्नी के पास वापस जाने की आज्ञा मॉगी।

शेर बोला — "मैं बहुत ही न्याय प्रिय जज हूँ। और तुम्हारे कहानी कहने से मुझे लग रहा है कि यह हिरन की गलती है कि उसने तुम्हारा पाम का रस चुराया। उसको हमारे दरबार के लिये शराब खरीदने के लिये काफी पैसे दिये गये थे पर उसने उसे तुमसे चुराना ज़्यादा अच्छा समझा।

उसने उस पैसे का क्या किया यह तो मुझे नहीं पता। इसके लिये तो मैं उससे बाद में निपटूँगा पर तुमको मैं एक बहुत ही खास भेंट देना चाहता हूँ। यह भेंट तुम्हारी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी।

और वह भेंट यह है आज के बाद तुम्हारे अन्दर सब जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ जायेगी।"

कोफ़ी वहाँ इस इन्तजार में खड़ा रहा कि उसको वह भेंट कब मिलेगी जो उसकी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी। क्योंकि उसको ऐसा लग ही नहीं रहा था कि यह भेंट कोई ऐसी भेंट थी जो उसकी मुश्किल आसान कर सकती थी।

शेर बोला — "अब तुम जा सकते हो। अब हम अपने दोस्त के बारे में बात करेंगे कि उसका हमें क्या करना है।"

कोफ़ी ने जानवरों को अपना सिर झुका कर वहाँ से जाते हुए सोचा यह तो बड़ी अजीब सी बात है। यह क्या भेंट हुई पर कहीं शेर नाराज न हो जाये इसलिये उसने शेर को धन्यवाद दिया और

वहॉ से जाने के लिये मुड़ा कि शेर बोला — "तुम्हारी भेंट के बारे एक और बात।"

"क्या?" कोफ़ी ने कुछ परेशान सा होते हुए पूछा।

"तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे और अगर बताओगे तो तुम मर जाओगे।"

कोफ़ी ने शेर को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वहॉ से लौट पड़ा। हालॉकि जब वह लौट रहा था तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा लौट रहा था।

वह सोच रहा था — "यह क्या भेंट थी? जानवरों की भाषा समझ कर मैं अपने नुकसान को कैसे पूरा कर पाऊॅगा? यह तो बहुत बड़ा मजाक था मेरे साथ।

और इसके बारे में बात न करना तो और भी बड़ा मजाक है। इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूॅगा बजाय इसके कि मैं इसके बारे में चुप रहूॅ।"

इतनी लम्बी दौड़ से थका हुआ और नाउम्मीद कोफ़ी अपने घर चला गया। उसको डर था कि उसकी पत्नी तो पागल ही हो जायेगी जब उसको लगेगा कि वह इतनी देर तक घर से बाहर रहा।

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपनी पत्नी को समझदार पाया कि उसने उससे उसके बाहर रहने को बारे में ज़्यादा कुछ खास नहीं पूछा। वह तो बस उसके वापस आने पर बहुत खुश थी।

वह बोली — "तुम इतनी देर तक थे कहॉ? तुम्हारा चेहरा तो बहुत ही खराब लग रहा है। तुम ठीक तो हो न? क्या तुम चोर को पकड़ सके?"

वह बोला — "वह चोर हिरन था जो हमारी बदकिस्मती बन कर आया था। मैं उसके पीछे भागा भी पर उसको पकड़ नहीं सका।"

उस रात कोफ़ी फिर से अपने पाम के पेड़ों को देखने के लिये गया कि हिरन कहीं फिर से तो उसकी पाम की शराब लेने के लिये न आया हो। पर अब की बार हिरन वापस नहीं आया था। अगले दिन सुबह उसके सारे कैलेबाश पाम की शराब से भरे हुए थे।

यह देख कर कोफ़ी बहुत खुश हुआ और सारे कैलेबाश घर ले आया और उनको अपनी पत्नी के बाजार ले जाने के लिये तैयार कर दिये।

अब वह रोज सुबह पाम की शराब घर ले आता और उसकी पत्नी उनको अच्छे दाम पर बाजार में बेच देती।

उस रात के बाद यानी जबसे कोफ़ी ने उस हिरन का पीछा किया था उसकी किस्मत अब कुछ कुछ जाग गयी थी। अब उसके पास कुछ पैसे जमा हो गये थे जिनसे वह अपनी जरूरत की कुछ चीज़ें खरीद सकता था जैसे जानवर, बकरियॉ, घोड़े।

उसकी पत्नी भी अब पहले से बहुत खुश थी क्योंकि उसने भी कुछ नये कपड़े बनवा लिये थे ताकि वह अब लोगों में ठीक से दिखायी दे सके।

इस बीच कोफ़ी भी अब जानवरों की भाषा समझने लगा था कि वे क्या कह रहे थे। अक्सर वह उनकी बातें समझ कर मुस्कुरा देता या फिर ज़ोर से हॅस पड़ता लेकिन फिर उसको अजीब लगता क्योंकि कोई नहीं जान पाता कि वह क्यों हॅस रहा है।

एक गर्म दिन को तीसरे पहर में अपने खेत को बोआई के लिये जोतने के बाद कोफ़ी नदी पर नहाने गया।

वहॉ उसने सुना कि एक मुर्गी अपने दस बच्चों से कह रही थी — "यह आदमी इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है कि केवल पानी अपने शरीर के ऊपर डालने के लिये ही अपने सारे कपड़े उतार दे।

कोई आश्चर्य नहीं कि उसको तो यह पता ही नहीं होगा कि सोने से भरा एक बक्सा तो इसके अपने मकान के पीछे की तरफ ही गड़ा है।

मैंने पिछली बार उसको वहॉ तब देखा था जब मैं वहॉ कीड़ों के लिये उस जगह को खुरच रही थी। पर फिर मैंने उसको मिट्टी से ढक दिया क्योंकि एक कुत्ते ने मुझे वहॉ से भगा दिया था।"

"हा हा हा हा"। कोफ़ी यह सुन कर हॅसा तो वह मुर्गी उसकी इस हॅसी से चौंक गयी सो वह जल्दी ही चुप हो गया। फिर यह यकीन करने के लिये कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा उसने

अपनी हथेली अपने चेहरे पर कई बार फेरी। उसको लगा कि नहीं वह कोई सपना नहीं देख रहा था यह सब वाकई उसने सुना था।

उसने अपनी छोटी उँगली अपने कान में डाल कर कान भी साफ किये। उसने देखा कि उसके कान भी ठीक ही थे।

फिर उसने मुर्गी को अपने एक बच्चे को डॉटते हुए सुना — "उस कीड़े को अपने भाई के लिये छोड़ दे मैंने तुझे पहला कीड़ा दिया था न? तुझे बॉट कर खाना सीखना चाहिये।"

यह विश्वास करने के बाद कि उसने सब कुछ ठीक ही सुना था उसने अपना नहाना जारी रखा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नहा धो कर वह घर वापस आ गया।

रात हो जाने के बाद जब सब सो गये तो उसने अपना हल उठाया और अपने घर के पीछे गया और सोने से भरा बक्सा निकाल लिया।

अब क्या था अब तो उसके चारों तरफ सोना ही सोना हो गया था। और उस बक्से में तो इतना सारा सोना था कि वह और उसकी पत्नी दोनों अपनी सारी ज़िन्दगी बिना कुछ किये धरे गुजार सकते थे।

पर यह सब बात वह अपनी पत्नी को तो नहीं बता सकता था न कि उसको यह कहॉ से पता चला कि वह सोना वहॉ था और फिर उसे कहॉ खोदना था।

उसने वह बक्सा एक सुरक्षित जगह छिपा दिया और जैसे जैसे उसको उसकी जरूरत पड़ती जाती थी वह उसमें से एक एक टुकड़ा घर लाने लगा।

अब क्या था कोफ़ी और अरबा गॉव के ही नहीं बल्कि अपने देश के सबसे अमीर आदमी हो गये। अरबा गरीबों पर बहुत दयालु थी वह उनको अपने पैरों पर खड़ा होने में बहुत सहायता करती थी।

कोफ़ी भी बहुत दयालु था पर वह अपना ध्यान और ज़्यादा पैसा बनाने पर और और ज़्यादा मशहूर होने पर लगा रहा था। उन दोनों की ज़िन्दगी इससे अच्छी हो ही नहीं सकती थी। वे दोनों बहुत खुश थे। जल्दी ही उनके एक बेटा हुआ जिसको वे बहुत प्यार करते थे।

एक रात जब कोफ़ी और अरबा सोने के लिये लेटे तो कोफ़ी ने एक चुहिया दरवाजे पर कराहती हुई सुनी।

एक चूहा उससे बोला — "ये लोग अब बहुत अमीर हो गये हैं। अब इन्होंने अपने सारे दरवाजे लोहे के लगवा लिये हैं।

हम लोगों के लिये पहले अच्छा था जब ये लोग गरीब थे क्योंकि तब इनके लकड़ी के दरवाजे थे और तब तुम्हारी कराह इन के दरवाजे से हो कर अन्दर जा सकती थी पर अब नहीं जा सकती।"

"हा हा हा हा।" कोफ़ी यह सुन कर हॅस पड़ा। वह भूल गया था कि इस समय वह अपनी पत्नी के साथ था।

सो अरबा ने जैसे ही उसको हॅसते हुए सुना तो वह सोते से जागी और उससे पूछा — "हॅसने की क्या बात है कोफ़ी? क्या तुम फिर से मेरे खर्राटों पर हॅस रहे हो?"

कोफ़ी ने बात टाली — "नहीं नहीं। कुछ नहीं। मैं तो केवल सपना देख रहा था। तुम सो जाओ।" पर उसका हॅसना इतनी ज़ोर का था कि उसने बच्चे को भी जगा दिया।

और अरबा को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि बड़ी मुश्किल से तो उसने बच्चे को सुलाया था।

वह बोली — "यह तुम्हारा हॅसना तुमको किसी दिन किसी मुश्किल में डालेगा। मैंने इसको कई बार टालने की कोशिश की है पर आजकल तो तुम किसी मरे हुए शरीर पर भी हॅसते हो जो रोने वालों की भीड़ में होता है और फिर अपने आप ही बेवकूफ बनते हो। अब मुझे इसे सुलाने के लिये फिर से दूध पिलाना पड़ेगा। काश तुम इसको दूध पिला सकते।"

"मुझे अफसोस है प्रिये कि मैं यह काम नहीं कर सकता। हा हा हा हा। पर तुम अब सो जाओ।"

जैसी कि एक बहुत पुरानी कहावत है कि जब कुत्ते की मौत आती है तो उसकी सूँघने की ताकत खत्म हो जाती है, खास कर के मॉस की जो कि उसका सबसे प्यारा खाना है।

हालॉकि कोफ़ी अब एक बहुत ही अमीर आदमी था पर वह अपनी एक पत्नी से सन्तुष्ट था पर क्योंकि कोफ़ी के गॉव में एक से ज़्यादा पत्नी रखना अमीरी की एक निशानी थी सो उसने निश्चय किया कि वह एक और शादी करेगा।

कोफ़ी ने एक ऐसी सुन्दर लड़की से शादी की जिसको देख कर किसी को भी जलन हो सकती थी। वह लड़की कोफ़ी को अरबा के साथ बिल्कुल नहीं देख सकती थी।

जब वे साथ साथ हॅसते तो वह कहती कि वे उसके ऊपर हॅस रहे थे। जब वे आपस में बात करते तो वह कहती कि वे उसकी बुराई कर रहे थे। वह बस तभी खुश रहती जब वे आपस में लड़ रहे होते।

एक दिन जब वे अपने घर के पिछवाड़े खाना बना रहे थे तो कोफ़ी की दूसरी पत्नी वहॉ आयी तो कोफ़ी ने कुछ कुत्तों को उसके बारे में बात करते सुना।

एक कुत्ते ने दूसरे से कहा — "इसको देखो यह फिर यहॉ है। जबसे यह यहॉ आयी है तबसे हमारा तो खाने का हिस्सा ही कम हो गया है।"

दूसरा बोला — "वह सोचती है कि वह अगर हमारा हिस्सा खा लेती है तो वह बहुत बड़ी हो जायेगी।"

कोफ़ी फिर ज़ोर से हॅस पड़ा। अरबा ने पूछा — "तुम किस बात पर हॅस रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि अगर कोई आदमी अकेला हॅसता है तो उसके जबड़े में दर्द हो जाता है?"

कोफ़ी की दूसरी पत्नी बोली — "बहाने मत बनाओ कि तुम जानती नहीं हो कि मैं यहॉ क्यों हूॅ। मैं तुमको सारी रात अपने बारे में बात करते और हॅसते सुनती हूॅ और अब तुम मेरे सामने भी यह सब करने लगे हो। भगवान जानता है कि जब मैं यहॉ नहीं होती हूॅ तब तुम मेरे पीछे क्या करते होगे।"

अरबा ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की — "मैं सच कहती हूॅ कि मुझे यह नहीं मालूम कि यह क्यों हॅस रहा है।" पर कोफ़ी की दूसरी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी।

कोफ़ी ने अरबा को बचाने की कोशिश भी की पर इससे यह मामला और बिगड़ गया। उसकी दूसरी पत्नी ने यह सोच लिया था कि कोफ़ी अरबा को बहुत प्यार करता था और उसको किसी भी मुश्किल से बचाने के लिये कुछ भी कर सकता था।

इस तरह से कोफ़ी अपनी दो पत्नियों के साथ काफी समय तक रहता रहा और एक दिन उसकी यह हॅसी उसके लिये बहुत मॅहगी पड़ गयी।

एक बार जब कोफ़ी का बेटा बड़ा हो गया तो इस खुशी में उसने दो दिन की दावत का इन्तजाम किया। उसने दो गाय, दो बकरे और कुछ मुर्गे चुने और उनको मारने के लिये बॅधवा दिया।

वह भीड़ में बैठा हुआ था और अपनी पत्नियों की सहेलियों को एक खास नाच नाचते देख रहा था।

उस समय उसने एक गाय को यह कहते सुना — "यहॉ तो कुछ मजा नहीं आ रहा है। यह कब खत्म होगा। मैं तो यहॉ से बहुत जल्दी चले जाना चाहती हूँ।"

तो कोफ़ी का एक कुत्ता बोला — "जब तक तुम इसका आनन्द ले सकती हो अच्छा है कि तुम उसे ले लो क्योंकि कल को तो तुम्हारी हड्डियॉ भी मेरी हो जायेंगी।"

बदकिस्मती से इसी समय कोफ़ी की दूसरी पत्नी अकेले नाच रही थी। कुत्ते की बात सुन कर कोफ़ी को फिर एक बार हॅसी का दौरा पड़ गया — "हा हा हा हा।"

उसको हॅसता देख कर उसकी दूसरी पत्नी ने नाचना बन्द कर दिया और बोली — "बस, अब मैं और नहीं नाच सकती। सब लोग मेरे गवाह हैं कि तुम मेरे नाच पर हॅस रहे हो क्योंकि मुझे नाचना नहीं आता न।"

कोफ़ी ने कहा — "नहीं नहीं। ऐसा नहीं है मुझे तो बस ऐसे ही कुछ याद आ गया था और मैं हॅस पड़ा।"

उसने पूछा — "तो बताओ कि ऐसी कौन सी चीज़ तुमको इस समय याद आ गयी थी जो तुम इतनी ज़ोर से हॅस पड़े।"

पर कोफ़ी तो इस डर से कि वह मर जायेगा उसको यह बता भी नहीं सकता था कि वह क्यों हॅस रहा था। बिना किसी और

अप्रिय घटना के यह सब खत्म हो जाये इसलिये कोफ़ी ने उसको वायदा किया कि वह अपनी उस याद के बारे में उसको बाद में बता देगा।

कई दिन तक कोफ़ी की दूसरी पत्नी उससे पूछती रही कि उस दिन दावत के दिन वह क्या सोच कर हॅसा था पर उसने हमेशा ही उसे टाल दिया। पर जब उसकी पत्नी और नहीं सह सकी तो वह इस मामले को ले कर गॉव के सरदार के पास पहुॅची।

सरदार ने कोफ़ी से कहा — "कोफ़ी, अब यह मामला काफी दूर तक आ गया है मेरे दोस्त। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैंने इस मामले को अब तक कब का खत्म कर दिया होता।"

कोफ़ी ने सरदार से कहा — "मुझे अफसोस है सरदार कि मैं यह नहीं बता सकता क्योंकि अगर मैंने बताया तो मैं मर जाऊॅगा।"

यह सुन कर सरदार बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "यह तो एक और अजीब बात है कि तुम क्या सोच रहे हो यह बताने से तुम मर जाओगे। लगता है कि तुम मजाक कर रहे हो। ऐसा भला कौन है जो यह बता कर मर जायेगा कि वह क्या सोच रहा था?"

कोफ़ी वहॉ चुपचाप खड़ा था उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अगर उसने अपने हॅसने की वजह बता दी तो वह यकीनन मर जायेगा।

और अगर उसने नहीं बताया तो भी वह मर जायेगा, हालॉकि तब वह अपनी पत्नी की बातों से धीरे धीरे मरेगा।

सो उसने मरने का पहला तरीका चुना। उसने अगले दिन अपने सब दोस्तों को, परिवार वालों को और सरदार को अपने घर अपने मरने की दावत में बुलाया। उसने अब तक बहुत अच्छी ज़िन्दगी गुजारी थी सो वहॉ काफी लोग आये थे।

जब वे सब आ गये तो कोफ़ी बोला — "किसी को मेरे मरने पर रोने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं तुम सब लोगों की वजह से ही मर रहा हूॅ। अरबा, मैं तुमको अपना सारा सोना देता हूॅ। और मेरे बेटे, मैं तुमको अपनी सारी जायदाद देता हूॅ।"

फिर सरदार को सिर झुकाते हुए उसने अपनी हिरन और राजा शेर से मिलने की और शेर की उसके नुकसान भरने के बदले में भेंट देने की कहानी सुनायी।

तब उसने उनको बताया कि वह अपने बेटे की दावत वाले दिन क्यों हॅस रहा था। जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा।

वह दावत तो रोने में बदल गयी। गॉव वाले तो इतने ज़्यादा दुखी और गुस्सा थे कि उनको यह पता ही नहीं था कि वे कर क्या रहे थे जब उन्होंने कोफ़ी की दूसरी पत्नी को पकड़ा और उसको मार दिया।

उसको उन लोगों ने जला दिया और उसकी राख एक थैले में भर कर कौए को दे दी ताकि वह उसको नदी में फेंक दे।

पर कौआ शायद यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि उस थैले में क्या था सो जब वह उसको ले कर उड़ा तो उसने उस थैले को बीच में ही खोल कर देखा कि उसमें क्या था।

थैले के खुलते ही उसमें से कोफ़ी की पत्नी की राख उड़ कर चारों तरफ बिखर गयी। वह जहॉ भी गिरी लोगों के दिलों में एक दूसरे के लिये जलन पैदा हो गयी।

यहीं से बुरे आदमियों और बुरी चीज़ों की शुरूआत हुई। इससे पहले यहॉ हर जगह दया और प्यार था।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022